वार्षिक प्रतिवेदन

2015 - 16

कृषि विश्वविद्यालय

जोधपुर - 342304 (राज.)

वार्षिक प्रतिवेदन
2015-16

कृषि विश्वविद्यालय
जोधपुर-342304 (राज.)

2015-2016

:: सम्पादक एवं समन्वयक ::

डॉ. शम्भूसिंह सोलंकी

निदेशक, मानव संसाधन विकास एवं शिक्षा

E-mail : tsolanki.ss@gmail.com

:: प्रकाशक ::

निदेशक, मानव संसाधन विकास एवं शिक्षा

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर

E-mail : vcunivag@gmail.com

2015-16

अनुक्रमणिका

	पेज नं.
1. कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर का प्रशासनिक प्रतिवेदन	1-11
2. कृषि अनुसंधान	12-22
3. कृषि प्रसार शिक्षा	23-29
4. कृषि शिक्षा	30-40
अ) कृषि महाविद्यालय, मण्डोर, जोधपुर	
ब) कृषि महाविद्यालय, सुमेरपुर (पाली)	
स) कृषि महाविद्यालय, नागौर	
द) कृषि डिप्लोमा संस्थान, नागौर	
5. सार संक्षेप	40-41

कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर का प्रशासनिक प्रतिवेदन

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर की स्थापना राज्य के पश्चिमी क्षेत्र में कृषि अनुसंधान, प्रसार शिक्षा एवं कृषि शिक्षा के क्षेत्रों में विकास, प्रचार प्रसार के कार्यो को निष्पादित कर क्षेत्र की समग्र कृषि एवं कृषि आधारित क्रियाकलापों को विकासोन्मुखी बनाने हेतु किया गया हैं।

यह एक नव सृजित संस्थान हैं, जो कि अपने शैशव काल से ही प्रगति की ओर अग्रसर हैं। विश्वविद्यालय के कार्य क्षेत्र में छः जिलों (जोधपुर, बाड़मेर, पाली, जालोर, सिरोही एवं नागौर) का भू-भाग आता हैं। कृषि जलवायु खण्ड के आधार पर यह क्षेत्र तीन भागों में विभक्त किया गया हैं। जोधपुर तथा बाड़मेर जिलों का भू-भाग, शुष्क पश्चिमी मैदान खण्ड-I अ, के अंतर्गत आता हैं। जालोर, पाली तथा सिरोही (पिण्डवाड़ा तथा आबूरोड़ तहसील सम्मिलित नहीं) तथा जोधपुर की बिलाड़ा एवं भोपालगढ़ तहसील का भू-भाग, लूणी नदी के संग्रहण क्षेत्र के परिवर्तनशील मैदान खण्ड-II ब, के अंतर्गत हैं। नागौर जिले का भू-भाग, भीतरी जल निकास के मैदान खण्ड-II अ, के अंतर्गत हैं।

विश्वविद्यालय के कार्य क्षेत्र में जलवायु विषम परिस्थितियों वाली तथा कृषि कार्यो को चुनौती प्रदान करने वाली हैं। इस क्षेत्र में वर्षा कम अथवा अनियमित, अधिक तापक्रम, तेज/गर्म हवाऐं, कृषि को प्रभावित करती हैं। शुष्क पश्चिमी मैदान खण्ड-I अ, में औसत वर्षा 100 मी.मी. से 300 मी.मी., उच्चतम तापमान 40 से 42 डिग्री सेलसियस तथा न्यूनतम तापमान 8 डिग्री सेलसियस तक रहता हैं। लूणी नदी के संग्रहण क्षेत्र के परिवर्तनशील मैदान खण्ड-II ब, में औसत वर्षा 330 मी.मी. से 591 मी.मी. होती हैं। अधिकतम तापमान 40 डिग्री सेलसियस तथा न्यूनतम तापमान 1 से 5 डिग्री सेलसियस तक रहता हैं।

क्षेत्रफल की दृष्टि से राज्य का 28 प्रतिशत भाग इस विश्वविद्यालय का कार्यक्षेत्र हैं। इस भू-भाग में औद्योगिकिकरण कम है तथा कृषि ही आजीविका का मुख्य साधन हैं। इन कृषि जलवायु खण्डों में स्थित कृषकों को नवीनतम कृषि तकनीकी/प्रौद्योगिकी उपलब्ध करा उत्पादकता बढ़ाने, लागत घटाने, जल एवं मृदा जैसे प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग वैज्ञानिक पद्वति अपना कर कृषि के समग्र विकास हेतु 2 कृषि अनुसंधान केन्द्र (मण्डोर-जोधपुर, केशवाना-जालोर) तथा 3 कृषि अनुसंधान उप-केन्द्रों (सुमेरपुर-पाली, समदड़ी-बाड़मेर तथा नागौर) पर कृषि अनुसंधान कार्य किया जा रहा हैं। इन केन्द्रों पर बाजरा, मूंग, मोठ, ग्वार, तिल, अरण्ड, सरसों, राजगीरा, गेंहू, जीरा, इसबगोल, मैथी इत्यादि फसलों पर अनुसंधान कार्य जारी हैं। मुख्य फसलों के अतिरिक्त निर्यात की जाने वाली फसलें/उनसे प्राप्त उत्पाद जैसे जीरा, अरण्ड, मसालों एवं औषधीय महत्त्व (इसबगोल) वाली फसलों के अनुसंधान पर विशेष ध्यान दिया जा रहा हैं। उद्यानिकी फसलों जैसे कि प्याज, लहसुन, गाजर, आलू पर भी अनुसंधान प्रारंभिक स्तर पर शुरू किया जा चुका हैं।

नवीनतम कृषि तकनीकों के प्रचार प्रसार तथा स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार आवश्यक आंशिक संशोधन हेतु निदेशालय, कृषि प्रसार शिक्षा के अधीनस्थ छः कृषि विज्ञान केन्द्र (मौलासर-नागौर, अठियासन-नागौर, फलौदी-जोधपुर, केशवाना-जालोर, गुड़ामालानी-बाड़मेर एवं सिरोही) इन क्षेत्रों के किसानों को विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा समस्याओं का निराकरण, नवीन तकनीकों की जानकारी उपलब्ध

करवाने हेतु निरंतर प्रयासरत हैं।

विश्वविद्यालय में दो कृषि महाविद्यालय (मण्डोर-जोधपुर तथा सुमेरपुर-पाली) पूर्व से ही संचालित किये जा रहे हैं। शैक्षणिक सत्र 2015-16 में राज्य सरकार द्वारा एक नवीन कृषि महाविद्यालय नागौर में खोलने की स्वीकृति प्रदान की गई। इस नवीन महाविद्यालय का शिलान्यास माननीया मुख्यमंत्री महोदया श्रीमती वसुन्धरा राजे जी, राजस्थान सरकार द्वारा किया गया। वर्तमान में इन महाविद्यालयों में स्नात्तक स्तर तक का शिक्षण कार्य किया जा रहा हैं। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय द्वारा एक डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी चलाया जा रहा हैं।

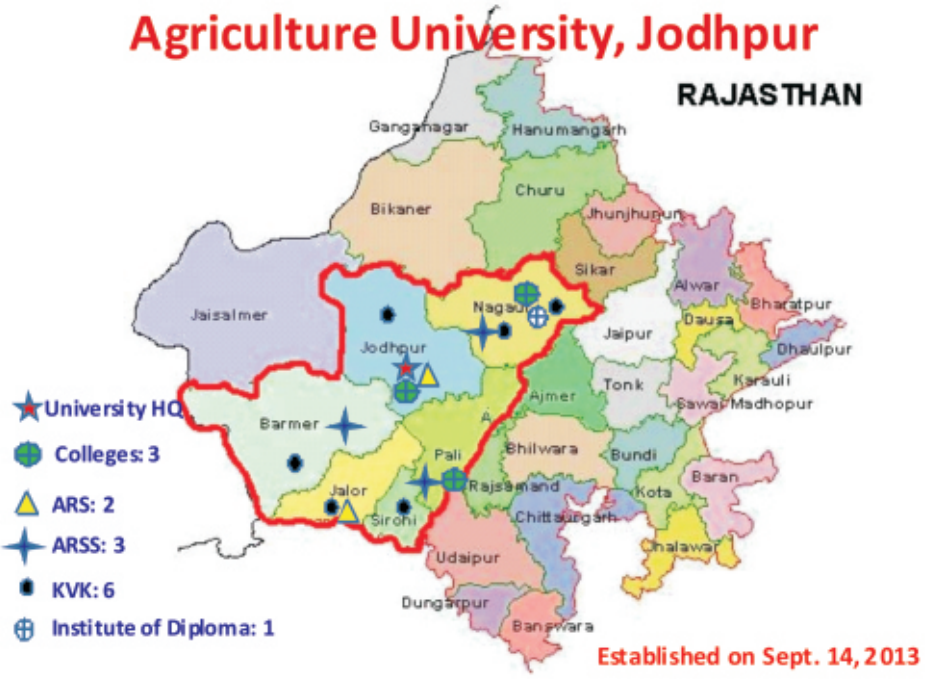

विश्वविद्यालय की लगभग संपूर्ण गतिविधियों के संचालन हेतु बजट राज्य सरकार की योजना, गैर-योजना, क्षेत्रीय, नार्प तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा उपलब्ध करवाया जा रहा हैं। यह विश्वविद्यालय अपने कार्यक्षेत्र के किसानों की प्रगति हेतु अनुसंधान, कृषि प्रसार तथा कृषि शिक्षा के तहत विभिन्न क्रियाकलापों द्वारा राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार की योजनाओं के अनुसार सतत् प्रयासरत हैं।

विश्वविद्यालय के उद्देश्य:

(क) अध्ययन की भिन्न-भिन्न शाखाओं में, विशिष्टतः कृषि, उद्यान-कृषि, मत्स्य पालनख्उद्यानिकी, में शिक्षा प्रदान करने के लिए उपबंध करना

(ख) विद्या का अभिवर्धन और अनुसंधान का संचालन, विशिष्टतः कृषि और अन्य सहबद्ध विज्ञानों में, करना

(ग) ऐसे विज्ञानों और प्रौद्योगिकियों की विस्तार शिक्षा को हाथ में लेना, विशेषतः राज्य की ग्रामीण जनता के लिए

(घ) ऐसे अन्य उद्देश्य जिन्हें विश्वविद्यालय समय समय पर अवधारित करें ।

संगठनात्मक/संस्थागत ढाँचा :

संस्थागत ढांचा

स्वीकृत कार्य एवं रिक्त पदों का विवरण:

राज्य योजना, गैर योजना एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा संचालित परियोजनाऐं तथा कृषि विज्ञान केन्द्र, जो विश्वविद्यालय के अंतर्गत चल रहे हैं, के पदों का विवरण इस प्रकार हैं:-

अ. प्रशासनिक पदों का विवरण

क्र.सं.	नाम पद	योग		
		स्वीकृत पद	भरे हुए पद	खाली पद
1.	कुलपति	1	1	(अतिरिक्त कार्यभार)*
2.	कुलसचिव	1	1	.
3.	वित नियंत्रक	1	1	.
4.	अधिष्ठाता / निदेशक	5	.	5
5.	भू–सम्पति अधिकारी	1	.	1
	योग	9	3	6

*प्रोफेसर डॉ. बी.आर. छींपा, कुलपति, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर को अतिरिक्त कार्यभार

ब. शैक्षणिक पदों का विवरण

क्र. सं.	नाम पद	आईसीएआर अनु0 परियोजना, पी.सी. ईकाई तथा कृषि विज्ञान केन्द्र	राज्य योजना	गैर योजना	योग		
					स्वीकृत पद	भरे हुए पद	खाली पद
1.	आचार्य	1	3	3	7	2	5
2.	सह–आचार्य / कार्य.सम	13	9	14	36	9	26
3.	सहायक आचार्य	47	34	28	109	29	80

स. तकनीक एवं अशैक्षणिक पदों का परियोजनात्मक विवरण

क्र.सं	आईसीएआरनाम पद	स्वीकृत पद	भरे हुए पद	खाली पद
1.	अनु0 परियोजना, पी.सी. ईकाई तथा कृषि विज्ञान केन्द्र	89	42	47
2.	राज्य योजना	104	20	84
3.	गैर योजना	27	16	11

विश्वविद्यालय में कुल 399 पद स्वीकृत हैं। जिसमें से 134 पद भरे हुए हैं तथा 265 पद रिक्त हैं।

विभागीय प्रमुख कार्य तथा प्रत्येक प्रमुख कार्य के विरूद्ध आलौच्य वर्ष (Current year) में प्रगति :

विश्वविद्यालय के विभिन्न प्राधिकारी में से प्रबंध बोर्ड, विद्या परिषद तथा वित्त समिति का गठन किया जा चुका हैं। इस सम्बन्ध में विभिन्न बैठकों की सूचना तथा लिये गये महत्त्वपूर्ण निर्णय निम्नानुसार हैं:-

प्रबंध बोर्ड

प्रबंध बोर्ड का गठन गत वर्ष लगभग पूर्ण किया गया, जिसमें इस वर्ष माननीय अध्यक्ष राजस्थान विधानसभा द्वारा श्री जोगाराम पटेल, विधानसभा सदस्य लूणी को नामित्त किया गया। इसके साथ ही बोर्ड का गठन संपूर्ण हुआ।

कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के प्रबंध मण्डल की प्रथम बैठक दिनांक 05.10.2015 को आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता माननीय कुलपति डॉ. बी.आर. छींपा द्वारा की गई। इस बैठक में निम्नलिखित सदस्यों ने भाग लिया-

1. श्री जोगाराम पटेल-विधायक, लूणी।
2. डॉ. बलराज सिंह, निदेशक, बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र, तबीजी, अजमेर।
3. श्री रतनलाल डागा, प्रगतिशील किसान
4. श्री ओ.पी. मित्तल, कृषि उद्यमि
5. डॉ. बी. के. शर्मा, प्रोफेसर, राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुरा-जयपुर।
6. श्री मंजीत चारण, कोषाधिकारी (शहर) जोधपुर-प्रतिनिधि शासन सचिव, वित्त विभाग
7. डॉ. बी.आर. चौधरी, निदेशक अनुसंधान, कृषि विश्वविद्यालय,जोधपुर।
8. डॉ. भारत सिंह भीमावत, अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय, सुमेरपुर।
9. डॉ. जी.एस. राठौड़, निदेशक पी.एम.ई., कृषि विश्वविद्यालय,जोधपुर।
10. श्री असलम मेहर, आर.ए.एस., कुलसचिव, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर (सचिव)

इस बैठक में माननीय राज्यपाल महोदय एवं कुलाधिपति के निर्देशानुसार विश्वविद्यालय के स्थायी कुलपति हेतु चयन समिति में प्रबंध मण्डल द्वारा सदस्य नामित्त किया गया। विश्वविद्यालय में शैक्षणिक कार्यो के सुचारू रूप से निष्पादन हेतु वैकल्पिक तौर पर सेवानिवृत्त योग्य पात्र प्राध्यापकों को राज्य सरकार के निर्देशानुसार एवं उचित अनुमति से शैक्षणिक कार्यो से सहबद्ध करने हेतु कार्यवाही करने का निर्णय लिया गया।

प्रबंध मण्डल की प्रथम बैठक को दृष्टिगत रखते हुए बैठक के प्रारंभ में कृषि अनुसंधान, प्रसार शिक्षा, कृषि शिक्षा सम्बन्धी क्रियाकलापों तथा विश्वविद्यालय के प्रशासनिक एवं वित्तीय सम्बन्धी जानकारियों का परिचयात्मक विवरण माननीय सदस्यों के समक्ष प्रस्तुत किया गया।

विद्या परिषद्–

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर की विद्या परिषद की द्वितीय बैठक दिनांक 28.09.2015 को आयोजित की गई। इस बैठक में परिषद् के निम्न सदस्य उपस्थित रहे :-

01.	प्रो. बी. आर. छींपा–कुलपति, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर	अध्यक्ष
02.	श्री असलम मेहर–कुलसचिव, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर	सदस्य
03.	डॉ. एम.सी. बोहरा–अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय, मण्डोर–जोधपुर	सदस्य
04.	डॉ. बी.एस. भीमावत– अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय,सुमेरपुर–पाली	सदस्य
05.	डॉ. के.एल. पूनिया– अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय,नागौर	सदस्य
06.	डॉ. ईश्वर सिंह–निदेशक, कृषि प्रसार शिक्षा, कृ.वि.वि. जोधपुर	सदस्य
07.	डॉ. बी. आर. चौधरी–निदेशक अनुसंधान, कृ.वि.वि. जोधपुर	सदस्य
08.	डॉ. जी.आर. खैरवा–प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष (सांख्यिकी)	सदस्य
09.	डॉ. बी.एस. राठौड़– प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष (पादप रोग विज्ञान)	सदस्य
10.	डॉ. शम्भू सिंह सोलंकी–निदेशक,मानव संसाधन एवं शिक्षा,कृ.वि.वि.जोधपुर	सचिव

इस बैठक में विद्या परिषद् की प्रथम बैठक में लिये गये निर्णयों की पुष्टि की जाकर निर्णयों के क्रियान्वयन की समीक्षा की गई। बैठक में लिये गये महत्त्वपूर्ण निर्णय अद्योलिखित हैं:-

- **विश्वविद्यालय के संघटक महाविद्यालयों, अनुसंधान केन्द्रों एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों के अंतर्गत कई पद रिक्त हैं। अतः शिक्षा, अनुसंधान कार्य एवं कृषि प्रसार शिक्षा के कार्यों के सुचारू एवं सुव्यवस्थित ढंग से निष्पादन हेतु निर्णय लिया गया कि, रिक्त पदों पर सेवा निवृत्त प्राध्यापकों की सेवाऐं संविदा आधार पर ली जाऐं। सेवानिवृत्त प्राध्यापकों की सेवाऐं संविदा आधार पर लेने हेतु आयुक्त, कॉलेज शिक्षा, राजस्थान सरकार, जयपुर के आदेश क्रमांकः एफ 1(पे-पेंशन)स्था/आकाशि/15/718 दिनांक 20 जुलाई 2015 को अंगीकार करने पर सभी सदस्यों द्वारा सहमति व्यक्त की गई । यह निर्णय प्रबंध मण्डल की पहली बैठक (5.10.2015) में विचारार्थ एवं स्वीकृति हेतु रखा गया।**
- **पाठ्यक्रम विवरणिका में आवश्यक संशोधन के पश्चात् विश्वविद्यालय द्वारा मुद्रण की व्यवस्था करवाने का निर्णय लिया गया।**

- विश्वविद्यालय स्तर पर वेबसाईट का संचालन किया जा रहा हैं । इसमें आवश्यकता होने पर सुधार, परिवर्तन इत्यादि कर संघटक महाविद्यालयों, निदेशालयों, अनुसंधान केन्द्रों/उपकेन्द्रों, कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा प्रशासनिक वित्तीय कार्यो से संबंधित जानकारी/आवश्यक सूचना इत्यादि वेबसाईट पर सुगमता एवं सरलतापूर्वक उपलब्धता की व्यवस्था सुनिश्चित करने के प्रयत्न करने हेतु सहमति बनी।
- कृषि डिप्लोमा संस्थान, लाडनुं स्थित सभी स्वीकृत पदों के रिक्त होने के कारण अध्यापन कार्य प्रभावित हो रहा था। अतः अध्यापन कार्य सुचारू रूप से संचालित किया जाना संभव नहीं था। इस बाबत् सभी सदस्यों द्वारा कृषि डिप्लोमा में शिक्षा सत्र-2015-16 को शून्य सत्र घोषित करने हेतु सहमति प्रदान की गई।
- कृषि डिप्लोमा संस्थान, लाडनुं में विद्यार्थियों को प्रायोगिक शिक्षा तथा शिक्षकों की अनुपलब्धता इत्यादि की बाध्यता को दृष्टिगत रखते हुए सभी सदस्यों द्वारा एक राय से इस प्रस्ताव पर सहमति प्रदान की गई कि इस संस्थान को अस्थाई तौर पर कृषि महाविद्यालय, नागौर स्थानांतरित किया जावें। इस हेतु एक समिति का गठन किया गया।
- विश्वविद्यालय में कार्यरत् सहायक प्राध्यापकों एवं अन्य शिक्षकों को कैरियर एडवांसमेन्ट स्कीम के परिलाभ योग्य शिक्षकों को प्रदान करवाने हेतु निर्णय लिया गया।
- विश्वविद्यालय के मृदा विज्ञान, कृषि अर्थशास्त्र/कृषि व्यवसाय प्रबंधन, उद्यानिकी तथा जैव प्रौद्योगिकी विषयों के वरिष्ठ प्राध्यापक/वैज्ञानिक की अनुपलब्धता थी। अतः इन विषयों के विषय विशेषज्ञों का कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर अधिनियम 2013 के प्रावधान के अंतर्गत सहयोजन किया गया। विभिन्न नामों पर चर्चा उपरांत निम्नलिखित विषय विशेषज्ञों को सहयोजित किया गया।
    1. डॉ. नरपत सिंह शेखावत, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष वनस्पति शास्त्र तथा पादप जैव प्रौद्योगिकी (सेवानिवृत्त) जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय,जोधपुर।
    2. डॉ. राजेश शर्मा, निदेशक, कृषि व्यवसाय प्रबंध संस्थान, स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर।
    3. डॉ. एन.आर. पंवार, वरिष्ठ वैज्ञानिक (मृदा विज्ञान) डिविजन ऑफ नेचुरल रिर्सोसेस एण्ड इनवायरमेंट सांइन्सेस, काजरी, जोधपुर।
    4. डॉ. रविन्द्र पालीवाल, प्रोफेसर(उद्यानिकी), राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान (रारी) दुर्गापुरा, जयपुर।
- कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर में प्रस्तावित कृषि व्यवसाय प्रबंध संस्थान की स्थापना के संबंध में बुनियादी सुविधाओं का पता लगाने हेतु राज्य सरकार के निर्देशानुसार उपलब्ध बुनियादी सुविधाओं की उपयोगिता की संभावनाओं का पता लगाने हेतु एक समिति गठित की गई।
- कृषि डिप्लोमा उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थियों को रोजगार (कृषि पर्यवेक्षक इत्यादि) एवं उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु कृषि स्नात्तक प्रथम वर्ष उत्तीर्ण के समकक्ष मान्यता प्रदान करने एवं उच्च अध्ययन हेतु सभी डिप्लोमा उत्तीर्ण विद्यार्थियों को बी.एससी. (कृषि) द्वितीय वर्ष प्रथम सेमेस्टर में प्रवेश हेतु योग्य माना जाने का निर्णय लिया गया।

वित्त समिति

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर की वित्त समिति की प्रथम बैठक दिनांक 15.01.2016 को आयोजित की गई। बैठक में निम्नलिखित सदस्यों ने भाग लिया-

1. प्रो. बी.आर. छींपा-कुलपति (अध्यक्ष)
2. श्री विरधाराम चौधरी-वित्त नियंत्रक (सचिव)
3. डॉ. बी.आर. चौधरी, निदेशक अनुसंधान
4. श्री रतनलाल डागा, (प्रबंध बोर्ड द्वारा नामित्त सदस्य)
5. श्री मंजीत चारण, कोषाधिकारी (शहर) जोधपुर-वित्त विभाग के प्रतिनिधि

वित्त समिति की बैठक में संशोधित बजट अनुमान वित्त वर्ष 2015-16 एवं बजट अनुमान वित्त वर्ष 2016-17 को विचार विमर्श उपरांत अनुमोदित किया गया।

अन्य प्रमुख कार्य एवं उपलब्धियाँ :-

- विश्वविद्यालय के रिक्त पदों को भरने हेतु राज्य सरकार के कृषि विभाग (ग्रुप-3) के पत्र क्रमांकः 4 1(1)कृषि-3/2013 दिनांक 10.06.2015 द्वारा विश्वविद्यालय के स्वीकृत रिक्त पदों को भरने की अनुमति जारी की गई हैं। विश्वविद्यालय हेतु कुल 62 पदों की स्वीकृति तथा कृषि विज्ञान केन्द्रों के रिक्त पदों को भरने हेतु 32 शैक्षणिक एवं 33 अशैक्षणिक पदों की स्वीकृति जारी की गई ।
- गांव गोद :- माननीय राज्यपाल महोदय एवं कुलाधिपति के निर्देशानुसार एक गांव गोद लेकर उसे स्मार्ट विलेज में परिवर्तित करने हेतु कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर द्वारा गांव नेवरा तहसील औसियां-जोधपुर का चयन किया गया। ग्राम नेवरा में विश्वविद्यालय द्वारा किये गये मुख्य कार्यो का विवरण निम्नानुसार हैः-

1. अरण्ड के 50 अग्रिम प्रदर्शन लगाये गये।
2. जल संरक्षण हेतु किसानों को बून्द-बून्द सिंचाई पद्वति अपनाने हेतु प्रोत्साहित किया। जिसके परिणामस्वरूप किसान श्री गोरधनराम द्वारा यह पद्वति अपनाई गई।
3. खरीफ पूर्व दो विचार गोष्ठीयां दिनांक 07 एवं 21 जुलाई 2015 को आयोजित की गई। इसी अवसर पर किसानों को मूंग के 15, मोठ के 10 एवं तिल के 5 प्रदर्शनों हेतु आदान वितरण किये। इन प्रदर्शनों में किस्मों के तुलनात्मक अध्ययन् से ज्ञात हुआ कि उन्नत किस्मों को अपनाने पर 20 से 30 प्रतिशत अधिक उपज प्राप्त हो सकती हैं।
4. रबी फसलों में उत्पादन बढ़ाने हेतु चने के 10 प्रदर्शन, गेंहू के 13 प्रदर्शन आवंटित किये गये।
5. किसान-वैज्ञानिक संवाद का आयोजन किया गया। किसानों की खेती सम्बन्धी समस्याओं का निवारण, सब्जियों में अधिक कीटनाशी रसायनों के उपयोग के दुष्प्रभाव, जल एवं मृदा संरक्षण, पशुपालन से अधिक लाभ, स्वच्छता, प्लास्टिक के दुष्प्रभाव, वातावरण की स्वच्छता, बालिका शिक्षा आदि की महत्त्वता के बारे में जानकारी प्रदान की गई।
6. गोद लिये गये गांव नेवरा को स्मार्ट विलेज बनाने हेतु सुझाव एवं देखरेख हेतु वैज्ञानिकों/अधिकारियों की एक समिति गठित की गई हैं।

- कृषि महाविद्यालय, मण्डोर-जोधपुर एवं सुमेरपुर-पाली के भवन निर्माण का कार्य अंतिम चरण में हैं तथा शीघ्र ही नये परिसर (भवन) में कक्षायें प्रारंभ कर दी जावेगी।
- अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने हेतु गणतंत्र दिवस के अवसर पर माननीय कुलपति प्रोफेसर डॉ. बी.आर. छींपा द्वारा सराहनीय कार्यो हेतु प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गये।
- कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर, कृषि डिप्लोमा संस्थान लाडनुं तथा कृषि महाविद्यालय,सुमेरपुर-पाली के लिए भूमि के आवंटन हेतु प्रयास किये जा रहे हैं। यह सभी प्रस्ताव राज्य सरकार के समक्ष विचाराधीन हैं।
- अधिकारियों/कर्मचारियों की उपस्थिति बायो मैट्रिक प्रणाली से दर्ज करना सुनिश्चित किया गया। दिनांक 01.08.2015 से कृषि महाविद्यालयों (मण्डोर-जोधपुर एवं सुमेरपुर-पाली), क्षेत्रीय निदेशक कार्यालय मण्डोर तथा परियोजना समन्वयक युनिट(बाजरा), मण्डोर में इस पद्वति से उपस्थिति सुनिश्चित की जा रही हैं।
- कुलपति समन्वय समिति की बैठक में लिये गये निर्णयों तथा समय समय पर राजभवन सचिवालय द्वारा प्रदत्त निर्देशों की अनुपालना की जा रही हैं। जिसके तहत् शिक्षा की गुणवत्ता हेतु प-8 कार्यक्रम को लागू करना, विश्वविद्यालय के शैक्षणिक वातावरण में सुधार करना, मार्किंग सिस्टम लागू करना तथा विद्यार्थियों की कक्षाओं में 75 प्रतिशत उपस्थिति की अनिवार्यता सुनिश्चित की जा रही हैं।

वित्तीय ढाँचा

कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के अधीन शिक्षा, प्रसार शिक्षा एवं अनुसंधान से सम्बन्धित संस्थाओं के लिये वित्त वर्ष 2015-16 के परियोजनावार एवं संस्थावार बजट प्रावधान तथा दिसम्बर 2015 तक हुए व्यय का विस्तृत विवरण निम्नानुसार हैं:-

क्र. सं.	संस्था का नाम	(रूपये लाखों में) बजट प्रावधान एवं दिसम्बर 2015 तक व्यय	
		बजट प्रावधान	दिसम्बर 2015 तक व्यय
1.	2.	1.	2.
(1).गैर राज्य आयोजना			
1.	नार्प, मण्डोर	42.92	32.48
2.	रीजनल,मण्डोर	104.36	83.78
3.	बाजरा,मण्डोर	7.21	5.15
4.	मोठ, मण्डोर	8.47	6.42
5.	किसान घर, मण्डोर	3.50	2.56
6.	समदड़ी मण्डोर	8.59	6.02
	कुल (1–6) (कृषि अनुसंधान केन्द्र मण्डोर)	175.05	136.41
7.	7–टी–नार्प, सुमेरपुर	29.82	22.06
8.	7–रीजनल, सुमेरपुर	58.19	15.36
	कुल (7–8) (कृषि अनुसंधान उपकेन्द्र सुमेरपुर)	88.01	37.42
9.	कृषि अनुसंधान उप–केन्द्र, नागौर	32.95	24.70
10.	कृषि अनुसंधान केन्द्र, जालोर	37.99	29.61
	कुल (गैर आयोजना)	334.00	228.15

(2).ए.आई.सी.आर.पी. प्रोजेक्ट(बजट भा. कृ. अ. प. तथा राज्य सरकार द्वारा 75 : 25 के अनपुात में)

1.	अरण्डी(Castor) मण्डोर	70.85	38.31
2.	संभावित फसलें(UUC) मण्डोर	29.22	6.52
3.	तिल(Sesame) मण्डोर	140.75	97.70
4.	मसाला(Spices) मण्डोर	3.30	0.00
	कुल (अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाऐं)	244.12	142.54

(3).राज्य आयोजना

1.	विश्वविद्यालय प्रशासनिक कार्यालय जोधपुर	103.39	141.45
2.	कृषि महाविद्यालय मण्डोर	222.76	42.62
3.	कृषि महाविद्यालय सुमेरपुर	227.60	56.29
4.	कृषि डिप्लोमा संस्थान, लाडनुं	18.09	5.37
5.	कृषि महाविद्यालय नागौर	40.00	2.16
	कुल (राज्य आयोजना)	611.84	247.89

(4).आई.सी.ए.आर. द्वारा 100 प्रतिशत बजट पोषित योजनाएं

1.	पी.सी. यूनिट बाजरा	268.25	156.57
2.	डस्ट (पीपीवी एण्ड एफआरए)	10.00	2.59
3.	बॉयोफोर्टिफिकेशन	9.18	0.35
	कुल पी.सी. युनिट	287.43	159.52
समस्त कृषि विज्ञान केन्द्र			
1.	कृषि विज्ञान केन्द्र, जालोर	60.25	40.56
2.	कृषि विज्ञान केन्द्र, नागौर	68.75	45.09
3.	कृषि विज्ञान केन्द्र, मौलासर	49.20	28.75
4.	कृषि विज्ञान केन्द्र, फलौदी	34.20	6.30
5.	कृषि विज्ञान केन्द्र, गुढ़ामालानी	34.20	13.21
6.	कृषि विज्ञान केन्द्र, सिरोही	103.25	46.99
7.	कृषि प्रसार निदेशालय	4.10	0.49
	कुल (कृषि विज्ञान केन्द्र एवं प्रसार निदेशालय)	353.95	181.37
	कुल (आईसीएआर योजनाएं)	641.38	340.88

(5). अन्य परियोजनाएं

1.	7–जी–2 एआईसीआरपी मण्डोर	0.00	0.08
2.	एमआईडीएच–7सीएकए–1मण्डोर	23.45	0.13
3.	नाइजर एवं सीसेम एफएलडी	1.49	0.00
4.	टीएसपी केस्टर (अरण्डी)	1.11	0.00
5.	टीएसपी सीसेम (तिलहन)	0.45	0.00
6.	केस्टर नीड बेस 100प्र.श.	0.20	0.00
7.	सीसेम नीड बेस 100प्र.श.	0.75	0.00
8.	समदड़ी पी.सी.युनिट ट्रायल्स	0.51	0.00
9.	बाजरा ट्रायल्स मण्डोर (बायर)	5.13	0.00
10.	एफ.एल.डी. केस्टर मण्डोर	0.14	0.00
11.	टी.एस.पी. यूयूसी (अनुपयोगी फसलें)	1.00	0.00
12.	एन.एफ.एस.एम. (एफएलडी)के.वी.के.	3.90	0.00
13.	एन.एम.ओ.ओ.पी.(एफएलडी)के.वी.के.	5.40	0.00
14.	पी.पी.वी. एण्ड एफ.आर.ए. (के.वी.के.)	2.40	0.00
15.	प्रशिक्षण (के.वी.के.)	1.60	0.00
16.	बायोफ्यूल प्रशिक्षण (रा.स.)के.वी.के	1.00	0.00
17.	जीरा ट्रायल प्राइवेट(रेलिस) क्यूमिन	1.50	0.00
18.	डस्ट	0.00	0.00
	कुल अन्य परियोजनाएं	50.03	0.21
	पेंशन फण्ड	0.00	15.74
	वि.वि. आय से अर्जित व्यय (University Dev.Fund)	20.00	1.11
	आर.के.वी.वाई	0.00	0.00
	कुल जोड़ (**Grand Total**)	1901.37	976.51

व्यय विवरण निर्माण कार्य

क्र. सं.	मद संस्था का नाम	(रूपये लाखों में)	
		बजट प्रावधान एवं दिसम्बर 2015 तक व्यय	
		बजट प्रावधान अनुमान 2015–16	दिसम्बर 2015 तक व्यय
1.	2.	1.	2.
1.	कृषि महाविद्यालय, मण्डोर	250.00	50.00
2.	कृषि महाविद्यालय, सुमेरपुर	250.00	50.00
3.	कृषि महाविद्यालय, नागौर	0.00	0.00
4.	राज्य कृषि विकास योजना के अंतर्गत निर्माण	75.00	75.00
	कुल व्यय	575.00	175.00

जोधपुर कृषि विश्वविद्यालय की वित्त समिति की बैठक दिनांक 15.01.2016 को कुलपति महोदय की अध्यक्षता में आयोजित की गई। जिसमें संशोधित बजट अनुमान वित्त वर्ष 2015-16 एवं बजट अनुमान वित्त वर्ष 2016-17 को विचार विमर्श उपरांत अनुमोदत किया गया।

कृषि अनुसंधान

निदेशालय कृषि अनुसंधान का मुख्य कार्य प्रयोगों की योजना, समन्वय एवं आवश्यकता जनित कृषि उत्पादन प्रौद्योगिकी का विकास करना हैं। इस हेतु कृषि जलवायु खण्ड की कृषि आवश्यकताओं के अनुसार शोध कार्य किये जा रहे हैं।

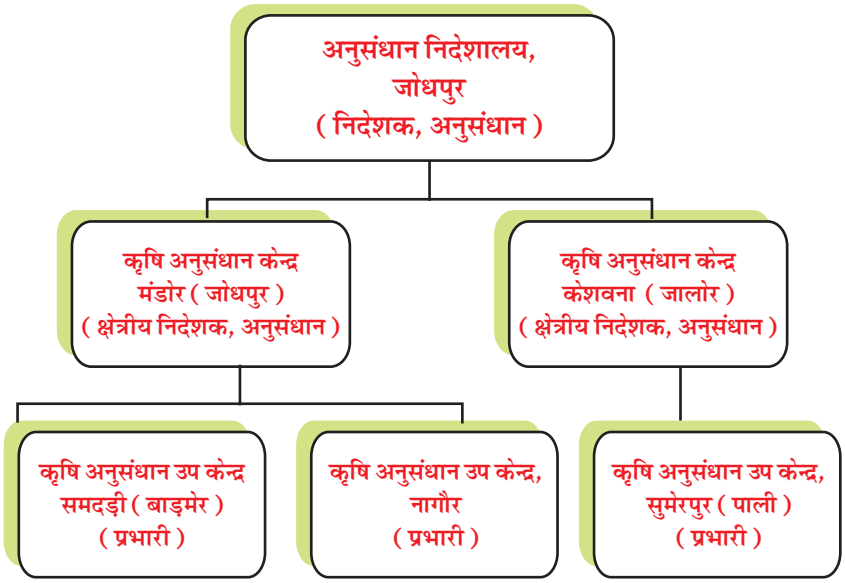

कार्यक्षेत्र व प्रमुख कार्य :-

कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के क्षेत्राधिकार में 6 जिले आते हैं। जिसमें कृषि जलवायु खण्ड 1 ए (शुष्क मैदानी पश्चिमी क्षेत्र) के बाड़मेर व जोधपुर जिले, खण्ड 2 बी (लूणी नदी का अंर्तवर्ती मैदानी क्षेत्र) के पाली, सिरोही व जालोर जिले और खण्ड 2 ए (अंर्तक्षेत्रीय जलोत्सारण के अर्न्तवर्ती मैदान क्षेत्र) का नागौर जिला शामिल हैं। निदेशालय के प्रत्येक केन्द्र एवं उप केन्द्र के लिए उस क्षेत्र की कृषि परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए शोध कार्यो संबंधी नेतृत्व एवं सत्यापीकरण के उत्तरदायित्व निर्धारित हैं तथा उसी अनुसार कृषि अनुसंधान कार्य किये जा रहे हैं।

निदेशालय द्वारा अनुसंधान के प्राथमिक क्षेत्र इस प्रकार है-

- प्रमुख रबी एवं खरीफ फसलों की उपयुक्त किस्मों की पहचान,विकास व उन्नत उत्पादन तकनीक विकसित करना।
- नर्मदा कमान क्षेत्रों में दबाव सिंचाई प्रणाली का विकास व मान्यकरण
- परिशुद्ध खेती के लिए ड्रिप व फँव्वारा सिंचाई प्रणाली का स्वचलनीकरण
- विशेष रूप से सब्जियों, मसालों और औषधीय फसलों में जैविक खेती
- बागवानी फसलों में फसलोत्तर प्रौद्योगिकियाँ

- कृषि, जैव विविधता संरक्षण और प्रबंधन केन्द्र
- खेती की लागत कम करने के लिए, नमी संरक्षण,खरपतवार नियंत्रण व कटाई हेतु क्रियाओं का मशीनीकरण करना
- मेंहदी के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास करना
- बागवानी के लिए उत्पादन प्रौद्योगिकियों का विकास करना

प्रमुख अनुसन्धान परियोजनाएं एवं महत्वपूर्ण उपलब्धियां

महत्वपूर्ण अनुसंधान परियोजनाएं इस प्रकार हैं-

अ. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा प्रायोजित

1.अखिल भारतीय समन्वित तिल सुधार परियोजना-यह परियोजना तिल की उन्नत किस्मों का विकास/परीक्षण तथा उन्नत उत्पादन तकनीके विकसित करने हेतु शोध कार्यो में कार्यरत हैं।

2. अखिल भारतीय समन्वित अरण्ड सुधार परियोजना-यह परियोजना अरण्ड की उन्नत किस्मों का विकास/परीक्षण तथा उन्नत उत्पादन तकनीके विकसित करने हेतु शोध कार्यो में कार्यरत हैं।

3.अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान नेटवर्क-संभावित फसलें (ए.आई.सी.आर.एन.)-इस परियोजना के तहत् खरीफ में तुम्बा एवं कलिंगड़ा पर अनुसंधान कार्य किया जा रहा हैं। रबी में राजगीरा एवं बथुआ पर अनुसंधान कार्य प्रगति पर हैं।

ब. राज्य सरकार द्वारा प्रायोजित

1. गैर-योजनागत योजना : क्षेत्रीय, नार्प, बाजरा और मोठ

स.तदर्थ परियोजनाएं

राष्ट्रीय कृषि विकास योजना-इस योजना के तहत् कृषि अनुसंधान केन्द्र, मण्डोर के फार्म में सड़क निर्माण कार्य प्रगति पर हैं।

द. बीजीय मसालों पर सी.एस.एस. परियोजना

निदेशालय सुपारी एवं मसाला विकास (कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय,भारत सरकार) कालीकट्ट, केरल द्वारा वित्तीय रूप से पूर्णतः पौषित योजना, जो कि केन्द्रीय प्रायोजित योजना-मिशन फॉर इन्टीग्रेटेड होर्टीकल्चर डवल्पमेन्ट(एम.आई.डी.एच.) के अंतर्गत कृषि अनुसंधान केन्द्र, मण्डोर-जोधपुर पर चल रही हैं। इस योजना के उद्देश्य निम्नानुसार हैं:-

1.बीजीय मसालों का उन्नत बीज उत्पादन तथा वितरण

2.बीज विधायन तथा भण्डारण हेतु बुनियादी ढाँचा विकसित करना

3.अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों द्वारा प्रौद्योगिकी का प्रसार-प्रचार

4.प्रशिक्षण कार्यक्रम,सेमीनार,कार्यशाला तथा किसान गोष्ठी इत्यादि का आयोजन करना

उक्त उद्देश्यों के अंतर्गत विश्वविद्यालय द्वारा बीजीय मसालों पर कार्य किया जा रहा हैं। जिसका प्रगति विवरण अद्योलिखित हैं:-

- योजना के अंतर्गत बीजीय मसालों के उच्च गुणवत्ता वाले बीज उत्पादन करने पर लागत व्यय 4 हजार प्रति क्विंटल तथा मिर्च का बीज उत्पादन करने पर 75 हजार रूपये प्रति क्विंटल उत्पादनकर्त्ता संस्थान को देय होता हैं। इसके अंतर्गत विश्वविद्यालय के विभिन्न केन्द्रों पर किये गये बीज उत्पादन की मात्रा निम्नानुसार हैं :

क्र.सं.	केन्द्र	बीज उत्पादन (क्विंटल)		राशि रूपये में
		जीरा	मैथी	
1.	कृषि अनुसंधान केन्द्र, मण्डोर	30.00	0.30	1,21,200
2.	कृषि अनुसंधान केन्द्र, केशवाना–जालोर	2.79	5.70	33,960
3.	कृषि विज्ञान केन्द्र, केशवाना–जालोर	3.20	–	12,800
4.	कृषि विज्ञान केन्द्र, नागौर	1.42	–	5,680
5.	कुल	37.4	6.00	1,73,640
मिर्च बीज (कि.ग्रा.)				
1.	कृषि अनुसंधान केन्द्र, मण्डोर	53.00		39,750
	कुल राशि			2,13,390

- उत्पादित बीज को प्रोसेसिंग करने हेतु कृषि अनुसंधान केन्द्र, मण्डोर पर एक बीज प्रसंस्करण इकाई स्थापित की गई, जिसका व्यय रूपये 8.87 लाख, योजना द्वारा वहन किया गया।

- अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों द्वारा बीजीय मसालों की उन्नत कृषि तकनीकों का प्रचार-प्रसार करने हेतु जीरे के 45 प्रदर्शन कुल 22.5 हेक्टेयर क्षेत्र में लगाये गये (0.5 हेक्टेयर/प्रदर्शन)। किसानों को सभी आदान जैसे कि बीज, उर्वरक, खरपतवार नाशी, कीटनाशी, फफूंदनाशी इत्यादि रसायन दिये गये। जीरे की फसल की उन्नत तकनीक को अपनाकर उत्पादन बढ़ाने हेतु किसानों को जानकारी प्रदान की गई। इन प्रदर्शनों में जीरे का 19.1 प्रतिशत अधिक उत्पादन दर्ज किया गया।

- बीजीय मसाला फसलों की उन्नत तकनीक का प्रचार प्रसार करने हेतु 3 कृषक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन जोधपुर,मेड़ता तथा कृषि विज्ञान केन्द्र, नागौर में किया गया। इन कार्यक्रमों में कुल 226 किसानों ने प्रशिक्षण प्राप्त कर उन्नत विधियों की जानकारी प्राप्त की।

ए.आई.सी.आर.पी. बाजरा परियोजना (परियोजना समन्वय इकाई बाजरा)

अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना, बाजरा के परियोजना समन्वयक का मुख्यालय कृषि अनुसंधान केन्द्र, मण्डोर पर स्थित हैं। इस परियोजना का बजट शत प्रतिशत भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा आवंटित होता हैं।

- अखिल भारतीय समन्वित बाजरा अनुसंधान परियोजना-जोधपुर द्वारा DUS दिशा निर्देश हेतु संगोष्ठी एवं क्षेत्र भ्रमण आयोजित किया गया।
- डॉ0 जे.एस. संधू उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा दिनाँक 15 अक्टूबर 2015 को अखिल भारतीय समन्वित बाजरा अनुसंधान परियोजना मण्डोर एव किसान प्रेक्षेत्रो का भ्रमण किया एवं परियोजना का अवलोकन किया।
- पौध किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण निगरानी टीम द्वारा दिनाँक 01 अक्टूबर 2015 को DUS परीक्षण प्रक्षेत्रो का अवलोकन किया गया।
- डॉ0 (श्रीमति) स्टेफीनिया ग्रान्डो, अनुसंधान कार्यक्रम निदेशक (शुष्क क्षेत्र खाधान्न), अन्तर्राष्ट्रीय अर्द्व शुष्क उष्ण कटि बंधीय फसल अनुसंधान संस्थान (ICRISAT), हैदराबाद, द्वारा 28 अक्टूबर 2015 को परियोजना मुख्यालय मण्डोर के अनुसंधान प्रक्षेत्रो का भ्रमण किया।

- वर्ष 2015–2016 मे राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन (एन.एफ.एस.एम) कार्यक्रम के तहत कृषि मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा इस परियोजना को 250 प्रर्दशन आवंटित किये गये। इस वर्ष कुल 225 अग्रिम पंक्ति प्रर्दशन राजस्थान, हरियाणा, गुजरात, मध्य प्रदेश, उतर प्रदेश, महाराष्ट्र कर्नाटक, आंध्र प्रदेश एवं तमिलनाडु राज्यों मे सफलतापूर्वक आयोजित किये गये।
- अखिल भारतीय समन्वित बाजरा अनुसंधान परियोजना मण्डोर द्वारा शस्य विज्ञान से सबन्धित 11 प्रयोग विभिन्न बाजरा उत्पादन करने वाले राज्यों के अनुसंधान केन्द्रो पर सफलतापूर्वक लगाये गये।

- परियोजना द्वारा विगत वर्ष मे दो किस्मे 86 एम 88 एंव 86 एम 01 अधिसूचना के लिए स्वीकृत की गई।
- DUS परीक्षण के अन्तर्गत 49 प्रविष्टियां विभिन्न 26 लक्षणो के लिए परियोजना द्वारा मण्डोर एवं MPKV राहुरी (महाराष्ट्र) मे लगाई गई।
- 56 Reference/ उदाहरण किस्में DUS परीक्षण के लिए मण्डोर एव MPKV राहुरी (महाराष्ट्र) मे लगाई गई।
- 23 बाजरा हाईब्रिड/किस्में/पैतृक पंक्तियॉं पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण मे पंजीकृत करवाई गई।
- अखिल भारतीय बाजरा अनुसंधान परियोजना-मण्डोर द्वारा पादप प्रजनन से संबधित 204 प्रयोग विभिन्न बाजरा उत्पादन करने वाले राज्यो के अनुसंधान केन्द्रो पर सफलता पूर्वक आयोजित करवाये ।
- पादप व्याधि विज्ञान के प्रयोगो के तहत कुल 353 संकर किस्म/पैतृक पक्तियों का (Parental Line) विभिन्न बाजरा उत्पादन करने वाले राज्यो के अनुसंधान केन्द्रो पर परीक्षण किया गया।
- पादप कार्यिकी विभाग से संबधित 6 प्रयोग विभिन्न बाजरा उत्पादन करने वाले राज्यों के अनुसंधान केन्द्रो पर सफलता पूर्वक आयोजित किये गये।

उन्नत किस्मों का विकास

- बाजरा परियोजना द्वारा विकसित एक उन्नत संकर किस्म MPMH-17 विकसित की गई हैं। जो कि राजस्थान,मध्यप्रदेश,हरियाणा,उत्तर प्रदेश एवं दिल्ली क्षेत्र के लिये उपयुक्त हैं। यह उन्नत किस्म मध्यम पकाव अवधि वाली, रोयेंदार सिट्टे, पकने के समय तक हरी रहने वाली तथा जोगिया एवं अन्य रोगों से रोधक हैं। इसकी औसत उपज 28 किंवटल प्रति हैक्टेयर तथा सूखे चारे की उपज 64 किंवटल प्रति हैक्टेयर हैं।
- वर्ष 2014-15 में एक अन्य उन्नत संकर किस्म MPMH-24 को अधिसूचना हेतु चिंहित किया गया हैं।

आलौच्य वर्ष (Current year 2015-2016) में अनुसंधान निदेशालय की प्रमुख उपलब्धियां:

क्षेत्रीय अनुसंधान एवं विस्तार सलाहकार समिति (ZREAC) आवश्यकता आधारित अनुसंधान कार्यक्रमों की योजना बनाने और उत्पादन सिफारिशों को अंतिम रूप देने के लिए एक नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करती है। ZREAC द्वारा राज्य के कृषि जलवायु खंड 1अ, 2अ व 2ब की प्रावेधिक कृषि तकनीक सिफारिशें (पैकेज ऑप प्रैक्टिसेज) हेतु सिफारिश की गई प्रमुख उपलब्धियां निम्नलिखित है:-

राजस्थान के कृषि जलवायु खण्ड 1अ (शुष्क मैदानी पश्चिमी क्षेत्र) के प्रावेधिक कृषि तकनीक सिफारिशें (पैकेज ऑप प्रैक्टिसेज) खरीफ 2015 में शामिल किये जाने के लिए स्वीकृत:

1. निम्नलिखित किस्मों का अनुमोदन किया गया:
   - बाजरा- जी.एच.बी.- 732, जी.एच.बी. -905
   - मूंग - आई.पी.एम. -02-03
   - ग्वार - एच.जी. -2-20, आर.जी.सी. -1031, आर.जी.सी . -1033
2. तिल में नाइट्रोजन प्रबंधन हेतु सिफारिश की गई मात्रा का 75 प्रतिशत अकार्बनिक स्रोत से तथा 25 प्रतिशत कार्बनिक स्त्रोत द्वारा करना
3. ग्वार में खरपतवार प्रबंधन हेतु बुवाई के 20 दिन पश्चात इमेजाथापर+इमाजामॉक्स (पूर्व मिश्रित) का 40 ग्राम प्रति हेक्टेयर के हिसाब से प्रयोग करना।
4. मूंग में खरपतवार प्रबंधन हेतु बुवाई के 20 दिन पश्चात इमेजाथापर+इमाजामॉक्स (पूर्व मिश्रित) का 60 ग्राम प्रति हेक्टेयर के हिसाब से प्रयोग करना तथा बुवाई के 35 दिन पश्चात हाथ से निराई करना ।
5. ग्वार में अंगमारी रोग को नियंत्रित करने के लिए डाईफेनाकोनाजोल की 0.5 मिलीग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना प्रभावी पाया गया।
6. मूंगफली में जड़ गलन व कॉलर गलन की रोकथाम हेतु 250 किलोग्राम जिप्सम प्रति हेक्टेयर, 20 किलोग्राम जिंक सल्फेट प्रति हेक्टेयर, 20 किलोग्राम आयरन सल्फेट प्रति हेक्टेयर, 30 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर और 2.5 किलोग्राम ट्राइकोडर्मा कल्चर प्रति हेक्टेयर के हिसाब से मृदा में प्रयोग करना प्रभावी पाया गया। (इन उर्वरों की मात्रा मिट्टी परीक्षण के आधार पर कम या ज्यादा करने की सिफारिश की जाती है)।
7. ग्वार में विभिन्न रोगों के जैविक प्रबंधन हेतु ट्राइकोडर्मा कल्चर का 10 ग्राम प्रति किलो बीज के हिसाब से बीजोपचार तथा 2.5 किलोग्राम ट्राइकोडर्मा कल्चर प्रति हेक्टेयर के हिसाब से मृदा में प्रयोग और नीम, धतूरा व आक की पत्तियों के अर्क का (1:1:1 अनुपात) 10 प्रतिशत अथवा बबूल की पत्तियॉ, तूम्बा फल व आक की पत्तियों के अर्क का (1:1:1 अनुपात) 10 प्रतिशत अथवा नीम की पत्तियॉ, लहसून की कलियॉ व आक की पत्तियों के अर्क का (1:1:1 अनुपात) 10 प्रतिशत का पर्णीय छिड़काव करना प्रभावी पाया गया।
8. भण्डारित तिल के बीजों (सिर्फ बीज के लिए), को लाल बीटल के प्रकोप से बचाने हेतु स्पाइनोसेड 45 एचसी का 0.5 मिलीग्राम अथवा डेल्टामेथ्रिन 2.8 ईसी का 0.4 मिलीग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज के हिसाब से उपचारित करना प्रभावी पाया गया।

निम्नलिखित उत्पादन सिफारिशों को राजस्थान के कृषि जलवायु खण्ड 2ब (लूणी नदी का अन्तर्वर्ती मैदान क्षेत्र) में अपनाये जाने हेतु स्वीकृत किया गया:-

1. किस्में

- बाजरा- जी.एच.बी.- 732, जी.एच.बी.- 905
- मूंग - आई.पी.एम.- 02-03
- ग्वार - एच.जी.- 2-20, आर.जी.सी.- 1031

2. मूंग की बुवाई 30 सेमी. पंक्ति से पंक्ति की दूरी पर करना तथा नमी और उष्ण ताप की स्थिति में 0.2 प्रतिशत पौटेशियम सल्फेट व 1000 पीपीएम थायोयुरिया का पर्णीय छिड़काव करना प्रभावी पाया गया।

3. तिल में सूचक कीटों के नियंत्रण हेतु ऐसीफेट 75 एसपी का 500 ग्राम प्रति हेक्टेयर के हिसाब से पर्णीय छिड़काव करना प्रभावी पाया गया।

राजस्थान के कृषि जलवायु खण्ड 1 अ (शुष्क मैदानी पश्चिमी क्षेत्र) व खण्ड 2ब (लूणी नदी का अन्तर्वर्ती मैदान क्षेत्र) की प्रावेधिक कृषि तकनीक सिफारिशें रबी 2015-16 में शामिल किए जाने के लिए स्वीकृत ।

1. किस्में:-

- सरसों: पूसा सरसों - 25
- चना: आर.एस.जी.- 945, जी.एन.जी.- 1581
- जौ: आर.डी.- 2794
- गेहूं: पी.बी.डब्ल्यू.- 590
- गाजर: पूसा रूधिरा
- प्याज:आर.ओ. 1 तथा आर.ओ.59

2. सरसों में समन्वित पोषक तत्व प्रबंधन के लिए सिफारिश उर्वरकों की 50 प्रतिशत मात्रा अकार्बनिक स्त्रोत से, साथ ही रासायनिकों द्धारा पादप संरक्षण तथा 50 प्रतिशत मात्रा गोबर की खाद व जैव उर्वरकों के माध्यम से प्रदान करना और सूक्ष्म पोषक तत्व सल्फर का प्रयोग करना प्रभावी पाया गया।

3. सौंफ में जैविक पोषण प्रबंधन हेतु सिफारिश नत्रजन की 100 प्रतिशत मात्रा गोबर की खाद से तथा साथ ही जैव उर्वरकों का प्रयोग, नीम आधारित उत्पादों अथवा एण्टोमोजिनस कवक अथवा जैवनाशकों अथवा परभक्षकों अथवा पादप अर्क अथवा गोशाला उत्पादकों के प्रयोग द्धारा पादप संरक्षण और 250 किग्रा. प्रति हेक्टेयर के हिसाब से मृदा में जिप्सम का प्रयोग करना अथवा सिफारिश नत्रजन की 50 प्रतिशत मात्रा फसल अवशेषों अथवा जैविक अवशेषों से तथा साथ ही 250 किग्रा. प्रति हेक्टेयर के हिसाब से मृदा में तूम्बे की खल का प्रयोग करना प्रभावी पाया गया।

4. मेथी में मोयला(एफिड)प्रबंधन हेतु ईमिडाक्लोप्रिड 600 एफ एस का 5.0 मिलीग्राम प्रति किग्रा बीज के हिसाब से बीजोपचारित करना तथा थॉयोमेथाक्जॉम 25 डब्लू. जी. का 0.3 ग्राम अथवा ऐसीटामिप्रिड 20 एसपी का 1.0 ग्राम अथवा ईमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस एल का 5.0 मिलीग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर पर्णीय छिड़काव करना प्रभावी पाया गया।

5. सौंफ में मोयला(एफिड) प्रबंधन हेतु थॉयोमेथाक्जॉम 25 डब्लू. जी. का 100 ग्राम अथवा ईमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस एल का 150 मिलीग्राम प्रति हेक्टेयर के हिसाब से पर्णीय छिड़काव करना प्रभावी पाया गया।

6. चना में फली बेधक कीट का नियंत्रण फेनवालेरेट 20 ईसी अथवा लेम्बड़ा साईलोथ्रिन 25 ईसी का 100

मिलीग्राम प्रति बीघा अथवा ईण्डोक्साकार्ब 14.5 प्रतिशत एस सी का 1.0 मिलीलीटर अथवा इमामेक्टीन बेन्जोएट 5 प्रतिशत एस जी का 0.5 ग्राम अथवा स्पाइनोसेड 45 एचसी का 0.33 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर पर्णीय छिड़काव द्धारा किया जा सकता है। (कृषि अनुसंधान केन्द्र, श्रीगंगानगर द्वारा विकसित तकनीक को अपनाया गया)

चुनौतियां एवं बाधाएं

कृषि विकास व आम किसानों की आजीविका सुरक्षा के लिए कम लागत की उत्पादन प्रौद्योगिकियाँ का विकास एवं अधिक उपज क्षमता वाली किस्मों का उपलब्ध होना बुनियादी आवश्यकता हैं। मृदा स्वास्थ्य में गिरावट, घटता जलस्तर और वैश्विक उष्णता (Global Warming) के कारण फसलों की उच्च उत्पादकता को प्राप्त करना एक गंभीर चुनौती हैं। ऐसी परिस्थतियों में कृषि अनुसंधान पर और अधिक ध्यान दिये जाने की आवश्यकता हैं।

शोध कार्यों में बाधाएं निम्नलिखित हैं:-

- वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों के 50 प्रतिशत से भी अधिक पद रिक्त हैं।
- बीजोत्पादन व अनुसंधान के लिए भूमि की आवश्यकता हैं।

महत्वपूर्ण बैठकें

- क्षेत्रीय अनुसंधान एवं विस्तार सलाहकार समिति (ZREAC) खरीफ-2015 की बैठक दिनांक 24 तथा 25 मार्च 2015 को आयोजित की गई। इस बैठक में कृषि जलवायु खण्ड 1 अ (शुष्क मैदानी पश्चिमी क्षेत्र) व खण्ड 2 ब (लूणी नदी का अन्तर्वती मैदान क्षेत्र) में स्थित राज्य कृषि विभाग के अधिकारियों व कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर के वैज्ञानिकों ने भाग लिया। इस बैठक में कुल 62 अधिकारी/वैज्ञानिक उपस्थित रहे।
- क्षेत्रीय अनुसंधान एवं विस्तार सलाहकार समिति (ZREAC) रबी-2014-15 की बैठक दिनांक 01 तथा 02 सितम्बर 2015 को आयोजित की गई। इस बैठक में कृषि जलवायु खण्ड 1 अ (शुष्क मैदानी पश्चिमी क्षेत्र) व खण्ड 2 ब (लूणी नदी का अन्तर्वती मैदान क्षेत्र) में स्थित राज्य कृषि विभाग के अधिकारियों व कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर के वैज्ञानिकों ने भाग लिया। इस बैठक में कुल 65 अधिकारी/वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

प्रकाशन

- जीरे की उन्नत खेती ; 2015 डा. एम. एल. महरिया, डा. एम. एम. सुन्दरिया, डा. बी. एस. राठौड, डा. संतोष चौधरी
- तिल की खेती ;2015 डा. एम. एम. सुन्दरिया एवं डा. एस. आर. कुम्हार, कृषि गोल्डलाइन, 14

बीज निदेशालय

बीज निदेशालय का मुख्य दायित्व विभिन्न फसलों के प्रजनक बीज, कृषि एवं सहकारिता विभाग,नई दिल्ली तथा कृषि विभाग राजस्थान की मांग अनुसार प्रजनक बीज उत्पादित कर उपलब्ध करवाना हैं। इसके अतिरिक्त क्षेत्र की मुख्य फसलों का सत्यापित बीज (टी.एल.) भी उत्पादित कर किसानों को उपलब्ध करवाता हैं।

निदेशालय, कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ विभिन्न अनुसंधान केन्द्रों/संस्थानों, कृषि विज्ञान केन्द्रों पर खरीफ, रबी व जायद में विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों के प्रजनक व सत्यापित बीज(ट्रयूथफुली लेबल्ड) के उत्पादन से विधायन (Seed Processing) तक के कार्य की देख रेख करता है। साथ ही जहाँ आवश्यकता हो वहाँ पर विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों के आधार बीज व प्रमाणित बीज उत्पादन कार्य की देखरेख भी करता है। विश्वविद्यालय इस उत्पादित उन्नत बीज (प्रजनक बीज) को अन्य बीज उत्पादन संस्थानों जैसे राजस्थान राज्य बीज निगम, राष्ट्रीय बीज निगम तथा निजी बीज उत्पादन करने वाली कम्पनियों को उनके द्वारा चाही गई मात्रा अनुसार (मांग जरिये कृषि विभाग, केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार) उपलब्ध करवाता है तथा अनुसंधान संस्थानों व कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से राज्य के किसानों की सुलभता हेतु सत्यापित (ट्रयूथफुल लेबल्ड) बीज उपलब्ध करवाने का कार्य भी करता है।

की वर्ष 2015-16 में बीज उत्पादन निम्नानुसार है:-

प्रजनक बीज :- वर्ष 2015 खरीफ में तिल का 177 कि.ग्रा. बीज (तालिका1)उत्पादित किया गया।

तालिका 1. कृषि अनुसंधान केन्द्र मण्डोर पर खरीफ 2015 में प्रजनक बीज उत्पादन

फसल	किस्म	कुल बीज क्विंटल
तिल	आर.टी. 346	0.67
	आर.टी. 351	1.10
कुल बीज उत्पादन		1.77

टी.एल. (ट्रयूथफुली लेबल्ड) बीज :- विश्वविद्यालय के विभिन्न केन्द्रों पर फसलों की अलग-अलग किस्मों का रबी 2014-15 में कुल बीज 360.27 क्विंटल (तालिका 2) उत्पादित किया गया। (गेहूँ, 193.81 क्विंटल, जौ 4.40 क्विंटल, राया 37.64 क्विंटल, चना 74.58 क्विंटल, जीरा 33.52 क्विंटल, मैथी 6.01 क्विंटल, ईसबगोल 9.86 क्विंटल, तथा मिर्च 45 कि.ग्रा.) जायद में संकर बाजरा, एम.पी.एम.एच. 17 का 592 कि. ग्रा. व ग्वार की आर.जी.एम. 112 किस्म का 145 कि.ग्रा. बीज (तालिका - 3) उत्पादित किया गया।

खरीफ 2015 में विश्वविद्यालय के अलग-अलग केन्द्रों पर फसलों की विभिन्न किस्मों का कुल 666.16 क्विंटल बीज (तालिका - 4) उत्पादित किया गया जिसमें में मूंग 299.93 क्विंटल, मोठ 31.55 क्विंटल, ग्वार 303.11 क्विंटल तथा तिल 31.57 क्विंटल था।

तालिका 2. कृषि विश्वविद्यालय के विभिन्न केन्द्रों पर रबी 2014-15 में फसलवार टी.एल. बीज उत्पादन

फसल	किस्म	कृषि अनुसंधान केन्द्र		कृषि अनुसंधान उप–केन्द्र, सुमेरपुर	कृषि विज्ञान केन्द्र, जालोर	कुल बीज (क्विंटल)
		मण्डोर	जालोर			
गेहूँ	राज. 4083	83.87	–	30.93	–	114.80
	के.आर.एल. 210	8.95	–	–	–	8.95
	के.आर.एल. 213	12.10	–	–	–	12.10
	पी.बी.डब्ल्यू. 644	2.55	–	–	–	2.55
	एच.डी. 3043	3.65	–	–	–	3.65
	डब्ल्यू.एच.1080	3.37	–	–	–	3.37
	राज. 3077	–	23.07	25.32	–	48.39
	कुल गेहूँ बीज	114.49	23.07	56.25	–	193.81
जौ	आर.डी. 2794	4.40	–	–	–	4.40
राया	पी.एम. 26	3.15	–	–	–	3.15
	पी.एम. 27	13.45	–	–	–	13.45
	आर.एच. 749	–	21.04	–	–	21.04
	कुल राया बीज	16.60	21.04	–	–	37.64
चना	आर.एस.जी. 973	–	8.18	–	–	8.18
	आर.एस.जी. 895	–	30.00	14.32	–	44.32
	आर.एस.जी. 896	–	–	22.08	–	22.08
	कुल चना बीज	–	38.18	36.40	–	74.58
जीरा	जी.सी. 4	25.45	4.78	–	3.29	33.52
मैथी	आर.एम.टी. 305	0.31	5.70	–	–	6.01
ईसबगोल	आर.आई. 1	7.30	–	–	2.56	9.86
मिर्च	आर.सी.एच. 1	0.45	–	–	–	0.45
कुल बीज उत्पादन		169.0	92.77	92.65	5.85	360.27

तालिका 3. कृषि विश्वविद्यालय के विभिन्न केन्द्रों पर जायद 2015 में फसलवार टी.एल. बीज उत्पादन

फसल	किस्म	कृषि अनुसंधान केन्द्र		कृषि अनुसंधान उप–केन्द्र, सुमेरपुर	कुल बीज (क्विंटल)
		मण्डोर	जालोर		
बाजरा	एम.पी.एम.एच. 17	5.92	–	–	5.92
ग्वार	आर.जी.एम. 112	1.45	–	–	1.45
कुल बीज उत्पादन		7.47	–	–	7.47

तालिका 4. कृषि विश्वविद्यालय के विभिन्न केन्द्रों पर खरीफ 2015 में फसलवार टी.एल. बीज उत्पादन

फसल	किस्म	कृषि अनुसंधानकेन्द्र		कृषि अनुसंधान उप–केन्द्र			कृषि विज्ञान केन्द्र				कुल बीज क्विंटल
		मण्डोर	जालोर	सुमेरपुर	समदड़ी	नागौर	जालोर	नागौर	मौलासर	सिरोही	
मूंग	जी.एम. 4	17.74	104.81	62.87	–	2.0	31.90	29.0	–	–	248.32
	आई.पी.एम. 02–03	14.37	–	–	–	–	–	–	–	–	14.37
	आई.पी.एम. 02–14	2.32	–	–	–	–	–	–	–	–	2.32
	मेहा	4.77	–	–	–	–	–	–	–	–	4.77
	आर.एम.जी.62	–	–	–	–	–	30.15	–	–	–	30.15
	कुल मूंग बीज	39.2	104.81	62.87	–	2.0	62.05	29.0	–	–	299.93
मोठ	आर.एम.ओ. 435	1.75	24.74	–	5.06	–	–	–	–	–	31.55
ग्वार	आर.जी.एम. 112	21.04	–	–	–	–	–	–	–	–	21.04
	एच.जी.2–20	0.55	–	–	–	–	–	–	–	–	0.55
	आर.जी.सी. 936	–	38.28	–	–	–	–	–	–	–	38.28
	आर.जी.सी. 1003	–	–		–	1.64	–	1.98	–	–	3.62
	आर.जी.सी. 1017	–	45.60	30.18	–	–	133.77	5.07	–	9.0	223.62
	आर.जी.सी. 1036	–	–		–	–	–	–	1.0	–	1.00
	आर.जी.सी. 1038	–	–		–	–	–	–	15.0	–	15.00
	कुल ग्वार बीज	21.59	83.88	30.18	–	1.64	133.77	7.05	16.0	9.0	303.11
तिल	आर.टी. 346	0.3	–		–	–	–	–	–	–	0.30
	आर.टी. 351	3.0	6.57	13.97	–	0.18	4.35	–	–	3.20	31.27
	कुल तिल बीज	3.30	6.57	13.97	–	0.18	4.35	–	–	3.20	31.57
कुल बीज उत्पादन		65.84	220.0	107.2	5.06	3.82	200.17	36.05	16.0	12.2	666.16

कृषि प्रसार शिक्षा

प्रसार शिक्षा निदेशालय

प्रसार शिक्षा का मुख्य ध्येय प्रशिक्षण, प्रदर्शन, कृषि सलाह व अन्य प्रसार माध्यमों से प्रभावी कृषि प्रौद्योगिकी का हस्तान्तरण कर मानव संसाधन विकास, ग्रामीण समुदाय की समृद्धि, कृषक एवं कृषक महिलाओं का आर्थिक व सामाजिक उत्थान, ग्रामीण युवाओं हेतु कृषि आधारित स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराना है। यह कार्य कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के अधीन कार्यरत प्रसार शिक्षा निदेशालय के माध्यम से 06 कृषि विज्ञान केन्द्रों के द्वारा संपादित किया जा रहा है।

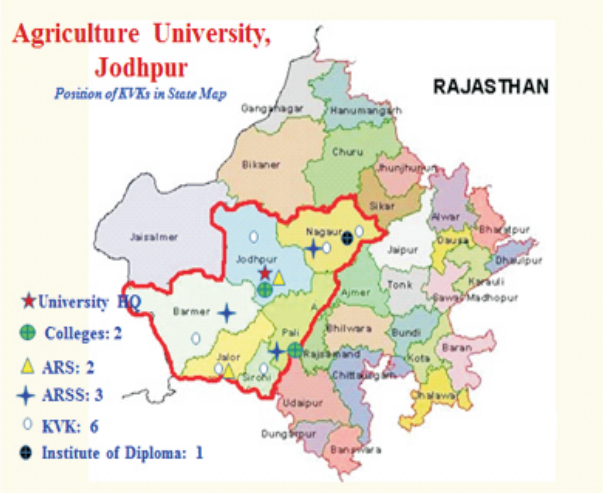

प्रसार शिक्षा निदेशालय के मुख्य उद्देश्य निम्न हैं -

- राज्य सरकार व गैर सरकारी संगठनों के कार्यकर्ताओं व विभिन्न अधिकारियें के लिये अनुसंधान द्वारा विकसित तकनीकी के पाठ्यक्रम तैयार कर प्रशिक्षण देना।
- राज्य के कृषक, कृषक महिलाओं एवं विद्यालय छोड़ चुके युवा वर्ग के कृषक बालकों एवं बालिकाओं हेतु लघु एवं दीर्घ अवधि के रोजगारोन्मुख प्रषिक्षण आयोजित करना।
- प्रथम पंक्ति प्रदर्शन व कृषकों के प्रक्षैत्रों पर व्यापक प्रसार के लिये परीक्षण आयोजित कर कृषि की नवीनतम प्रौद्योगिकी का मूल्यांकन एवं परिश्करण करना।
- प्रौद्योगिकी के शीघ्र प्रसार हेतु कृषि साहित्य तैयार करना तथा विविध माध्यमों से कृषि सूचनाएं कृषकों तक पहुँचाना।
- विश्वविद्यालय के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्यरत कृषि विज्ञान केन्द्रों की विभिन्न गतिविधियों का सुचारू रूप से संचालन, परिवेक्षण व मूल्यांकन करना

मिशन

प्रसार शिक्षा निदशालय का मिशन कृषकों की आय बढाना, आजीविका सुरक्षा, फसल विविधता जोखिम एवं कृषि की स्थिरता की गुणवत्ता में सुधार हेतु सामाजिक समानता एवं समावेश विकास करना।

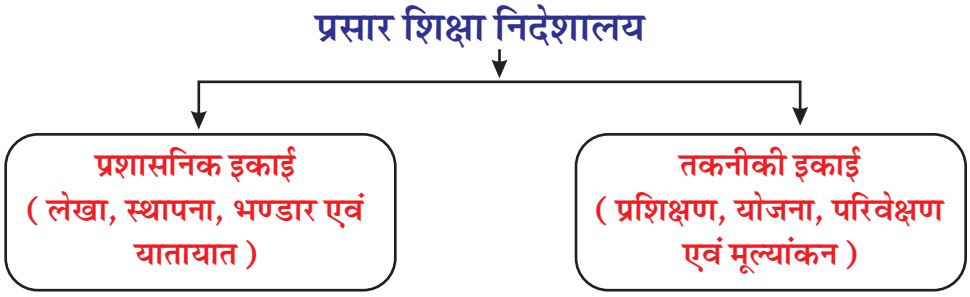

संस्थागत ढांचा

कृषि विज्ञान केन्द्र

राज्य के 10 कृषि शस्य जलवायु खण्ड़ में से में तीन कृषि शस्य जलवायु खण्ड़ विश्वविद्यालय के सेवा क्षेत्र में आते हैं जिनमें 9 कृषि विज्ञान केन्द्र कार्यरत है।

कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केन्द्र, निम्नानुसार हैं:-

कृषि विज्ञान केन्द्र, अठियासन, नागौर (1992 में स्थापित), कृषि विज्ञान केन्द्र, केशवाना, जालोर (1985 में स्थापित), कृषि विज्ञान केन्द्र, सिरोही (1989 में स्थापित), कृषि विज्ञान केन्द्र, गुड़ामालानी, बाड़मेर (2012 में स्थापित), कृषि विज्ञान केन्द्र, मौलासर - नागौर (2012 में स्थापित), कृषि विज्ञान केन्द्र, फलोदी,जोधपुर (2012 में स्थापित)।

अन्य एजेन्सियों द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केन्द्र:

कृषि विज्ञान केन्द्र, पाली तथा कृषि विज्ञान केन्द्र, जोधपुर, केन्द्रीय शुष्क अनुसंधान संस्थान (काजरी), जोधपुर द्वारा संचालित हैं। कृषि विज्ञान केन्द्र, दांता-बाड़मेर एन.जी.ओ. श्योर द्वारा संचालित किया जा रहा

स्वीकृत कार्य एवं रिक्त पदों का विवरण

कृषि विज्ञान केन्द्रों पर स्टॉफ पोजीशन

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर के अधीनस्थ 6 कृषि विज्ञान केन्द्रों पर कार्यक्रम समन्वयक के 6 पद रिक्त हैं, विषय विशेषज्ञों के 36 अनुमोदित पदों में से 27 पद रिक्त हैं । इसी तरह से फार्म प्रबंधक, कार्यक्रम सहायक (कंम्प्यूटर व प्रयोगशाला) के 18 पदों में से 14 पद रिक्त हैं। कार्यालय सहायक एवं स्टेनो के कुल 12 पदों में से 10 पद रिक्त हैं। केन्द्रों पर अनुमोदित ड्राईवर के 12 पदों में से 8 पद व चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी के 12 पदों में से 4 पद रिक्त हैं। इस प्रकार इन 6 केन्द्रों पर कुल अनुमोदित 96 पदों में से 69 पद रिक्त हैं, इसके बावजूद भी केन्द्रों को आवंटित सारे कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक अंजाम दिया जा रहा हैं।

विभागिय प्रमुख कार्य तथा प्रत्येक प्रमुख कार्य के विरूध आलौच्य वर्ष

(Current year 2015-2016) मे प्रगति

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा किसानों के खेत पर उन्नत प्रौद्योगिकी के प्रचार प्रसार के अंतर्गत इस वर्ष कुल 1252 प्रदर्शन लगाये गये। इसमें से संभाग की खरीफ फसलों (ग्वार, मूंग, मोठ, अरण्डी, बाजरा और तिल) पर 508, रबी फसलों, सब्जियों और फलों पर (जीरा, चना, इसबगोल, गेंहू, जौ, राया, गोभी, लौकी, भिंडी, पपीता) 660 तथा पशुओं में संतुलित आहार व खनिज मिश्रण पर 84 प्रदर्शन लगाये गये। फसलों पर लगाये गये प्रदशनों में खरीफ के दौरान उन्नत प्रौद्योगिकी के असर की वजह से औसतन 25 से 30 प्रतिशत तक उपज में वृद्धि दर्ज की गई। रबी के फसल प्रदर्शन अभी खेत में मौजूद हैं, जिनके परिणाम अप्रेल-मई माह तक आने की संभावना हैं।

प्रक्षेत्र परीक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा कृषकों की अति महत्वपूर्ण समस्याओं एवं उनके समाधान के लिए प्रक्षेत्र परीक्षण आयोजित किये जाते हैं। इन परीक्षणों में अनुसंधान केन्द्रों द्वारा सुझाई गई तकनीक में क्षेत्र विशेष के अनुरूप सूक्ष्म संशोधन किया जाता है। गत वर्ष कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा 12 प्रक्षेत्र परीक्षण आयोजित किये गये जिसमें फसलोत्पादन (8), पशुपालन (2) व उद्यानिकी (2) से संबंधित थे।

प्रसार कार्यकताओं एवं किसानों के प्रशिक्षण कार्यक्रम :

कृषि प्रसार से जुड़े अधिकारियों व कार्यकर्ताओं को कृषि की नवीनतम प्रौद्योगिकी से अवगत कराने के उद्देश्य से कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा 56 संस्थागत प्रशिक्षण आयोजित किये गये । कृषक एवं महिला कृषकों के लिये 95 असंस्थागत प्रशिक्षण गांवों में आयोजित किये गये जिसमें कृषकों को कृषि की नई प्रौद्योगिकी से अवगत कराने के लिये प्रदर्शन भी दिये गये। असंस्थागत प्रशिक्षणों के दौरान किसानों की कृषि संबंधित समस्याओं का समाधान भी किया गया।

पूर्व खरीफ व पूर्व रबी किसान सम्मेलनों का आयोजन :

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र, अठियासन एवं सिरोही को खरीफ एवं रबी किसान सम्मेलन आयोजित करने के लिये विशेष रूप से आर्थिक सहायता दी गई थी। इन किसान सम्मेलनों का उद्देश्य खरीफ और रबी मौसम शुरू होने से पहले किसानों को उनके क्षेत्र में उगाई जाने वाली फसलों के बारे में नवीन कृषि तकनीकि एवं बीज उपलब्ध करवाना तथा उस क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों को कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतिविधियों के बारे में जानकारी उपलब्ध करवाना था। कृषि विज्ञान केन्द्र सिरोही ने पूर्व खरीफ किसान सम्मेलन में सिरोही जिला प्रमुख श्रीमती पायल परसरामपुरिया को तथा पूर्व रबी किसान सम्मेलन में विधायक श्री समाराम गरासिया को किसानों के साथ आमंत्रित किया। इसी तरह कृषि विज्ञान केन्द्र, अठियासन-नागौर ने पूर्व खरीफ किसान सम्मेलन में विधायक नागौर श्री हबीबुर्रहमान को तथा पूर्व रबी किसान सम्मेलन में सांसद श्री सी.आर. चौधरी को किसानों के साथ आमंत्रित किया। इन किसान सम्मेलनों में विषय-विशेषज्ञों द्वारा किसानों की समस्याओं का समाधान किया गया तथा उन्नत कृषि तकनीक सम्बन्धी साहित्य व बीज किसानों को उपलब्ध करावाया गया।

अनार पर राज्य स्तरीय विचार गोष्ठी

कृषि विज्ञान केन्द्र, गुड़ामालानी एवं दांता, बाड़मेर के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 05.08.2015 को उन्नत अनार उत्पादन पर राज्य स्तरीय किसान गोष्ठी आयोजित की गई, जिसमें करीब 525 किसानों ने भाग लिया। इसमें बाड़मेर में अनार के बढ़ते क्षैत्रफल को ध्यान में रखते हुए अनार में आने वाली विभिन्न समस्याओं पर किसानों की जिज्ञासाओं को शान्त किया गया तथा उन्नत अनार उत्पादन पुस्तिका सभी किसानों को वितरित की गई।

अंर्तराष्ट्रीय मृदा दिवस का आयोजन

दिनांक 05.12.2015 को सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा अंर्तराष्ट्रीय मृदा दिवस का आयोजन किया गया। जिसमें नागौर सांसद श्री सी.आर. चौधरी ने ग्राम चावंडिया, पाली सांसद श्री पी.पी. चौधरी ने ग्राम गाजनगढ़, जोधपुर सांसद श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने कृषि अनुसंधान केन्द्र, मण्डोर-जोधपुर पर तथा बाड़मेर सांसद कर्नल श्री सोनाराम ने बाड़मेर में इस मृदा दिवस के अवसर पर समारोह की अध्यक्षता की। मृदा दिवस के आयोजन पर किसानों को कृषि विज्ञान केन्द्रों एवं कृषि विभाग की मृदा परीक्षण प्रयोगशाला द्वारा मृदा परिक्षण पश्चात् तैयार मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरित किये गये तथा मृदा जांच की उपयोगिता के बारे में विषय विशेषज्ञों द्वारा किसानों को जानकारी उपलब्ध कराई गई।

जय किसान जय विज्ञान दिवस का आयोजन

किसान नेता एवं पूर्व प्रधानमंत्री स्व. चौधरी चरणसिंह की जयंती के अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के निर्देशों के अनुसार सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा जय किसान जय विज्ञान दिवस सप्ताह दिनांक 23.12.2015 से 29.12.2015 तक मनाया गया। इस तकनीक हस्तांतरण सप्ताह के अंतर्गत, आदर्श सांसद ग्राम योजना के किसानों के खेतों पर विचार गोष्ठीयों का आयोजन किया गया। इस दौरान जालोर के होती गांव में विधायक श्रीमती अमृता मेघवाल, बाड़मेर के बायतु भोप जी गांव में सांसद कर्नल श्री सोनाराम चौधरी द्वारा अध्यक्षता की गई।

तैलीय पेड़ पौधों पर प्रशिक्षण

ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज के अधीनस्थ बायोफ्यूल प्राधिकरण,योजना भवन, सी-स्कीम, जयपुर ने दो प्रशिक्षणों के आयोजन हेतु आर्थिक सहायता उपलब्ध करवाई थी। इसके अंतर्गत कृषि विज्ञान केन्द्र सिरोही ने दिनांक 09.09.2015 से 10.09.2015 तथा दिनांक 29.10.2015 से 30.10.2015 को सिरोही जिले के वन विभाग के अधिकारियों एवं किसानों के लिये प्रशिक्षण आयोजित किये। इन प्रशिक्षणों में करंज, महुआ, रतनजोत, नीम एवं अन्य तैलीय पेड़-पौधों के विषय विशेषज्ञों को महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर से आमंत्रित कर प्रशिक्षण में जानकारी उपलब्ध करवाई गई।

कृषक-वैज्ञानिक संवाद

कृषि विज्ञान केन्द्रों एवं विस्तार निदेशालय द्वारा 6 कृषक-वैज्ञानिक संवाद आयोजित किये गये। जिसमें करीब 400 कृषक एवं कृषक महिलाओं ने भाग लिया तथा कृषकों की समस्याओं का समाधान किया।

कार्यक्रम समन्वयक प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, सिरोही को कृषि तकनीकि अनुप्रयोग संस्थान (काजरी परिसर), जोधपुर द्वारा एक कार्यक्रम समन्वयक प्रशिक्षण आवंटित किया गया था। जिसके अंतर्गत कृषि विज्ञान केन्द्र, मौहाली (पंजाब), बारामुला (जम्मू-कश्मीर), बानसुर (अलवर, राजस्थान) एवं बिलासपुर (छत्तीसगढ़) के कार्यक्रम समन्वयकों को एक सप्ताह का प्रशिक्षण दिया गया। इन प्रशिक्षु कार्यक्रम समन्वयकों को सिरोही जिले में उगाई जाने वाली सौंफ, जीरा, गेंहू, सरसों, अरण्डी, पपीता, टमाटर आदि की उन्नत तकनीक की बारे में अवगत कराया गया, साथ ही किसानों के खेतों पर इन फसलों का भ्रमण भी करवाया गया।

कृषि विज्ञान मेला

कृषि अनुसंधान केन्द्र, मण्डोर, जोधपुर पर 9 फरवरी 2016 को आत्मा के सहयोग से एक किसान मेला आयोजित किया गया। इस मेले में करीब 800 किसानों को उन्नत कृषि प्रौद्योगिकी की जानकारी विषय विशेषज्ञों द्वारा दी गई तथा कृषि अनुसंधान केन्द्र, मण्डोर-जोधपुर पर उगाई गई विभिन्न रबी फसलों की उन्नत किस्मों तथा प्रयोगो के बारे में किसानों को बताया गया।

आलौच्य वर्ष की प्रमुख उपलब्धियां

1. कृषि विज्ञान केन्द्रों के फॉर्मो पर बीज उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए अतिरिक्त निदेशक (बीज) के नेतृत्व में कार्य प्रारंभ किया।
2. केन्द्र सरकार की योजनाओं को दृष्टिगत रखते हुए मृदा स्वास्थ्य कार्ड किसानों के लिए बनाने शुरू किये एवं जागरूकता अभियान शुरू किया गया।
3. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा इस वर्ष विश्वविद्यालय के अधीन पाली और जालोर जिलों में दो नये कृषि विज्ञान केन्द्र स्वीकृत किये। नये कृषि विज्ञान केन्द्र, विश्वविद्यालय को संचालन हेतु प्राप्त हो, इस हेतु प्रस्ताव बनाकर परिषद् के समक्ष प्रस्तुत किये जायेंगे।
4. विस्तार निदेशालय ने ''नवीनतम तकनीकि ज्ञान समावेश'' हेतु एक दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शुष्क क्षेत्रीय फल एवं औषधीय पौधों की नवीनतम उत्पादन तकनीक पर आयोजित किया, जिसमें राज्य के समस्त कृषि विश्वविद्यालयों के 22 प्रशिक्षुओं ने भाग लिया।
5. अनार उत्पादकों के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र, गुढ़ामालानी एवं दांता-बाड़मेर द्वारा राज्य स्तरीय विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें 525 काश्तकारों ने भाग लेकर जानकारी अर्जित की।

प्रकाशन : 10 तकनीकी मार्गदर्शिका व 14 फोल्डर्स, कृषकों को कृषि तकनीकी साहित्य उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से प्रकाशित किये गये।

कृषि शिक्षा

कृषि महाविद्यालय, मण्डोर, जोधपुर

कृषि महाविद्यालय, मण्डोर जोधपुर में कृषि विज्ञान (ऑनर्स) स्नातक डिग्री पाठ्यक्रम चल रहा हैं, जिसमें कुल 166 विद्यार्थी अध्ययनरत् हैं। इन विद्यार्थियों में 34 छात्र तथा 55 छात्राओं को विभिन्न एजेन्सियों द्वारा छात्रवृत्ति प्रदान की जा रही हैं। महाविद्यालय के विद्यार्थियों का पहला बैच इस वर्ष डिग्री पूर्ण कर लेगा। विद्यार्थियों का कोर्स वर्क समाप्त हो चुका हैं तथा इस सेमेस्टर में उन्हें (ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव) कार्यक्रम के तहत् कृषि सम्बन्धित कार्य तथा कृषकों की सामाजिक, आर्थिक, कृषि तकनीकी ज्ञान सम्बन्धी कार्यानुभव प्राप्त करने हेतु गांवों में भेज दिया गया हैं।

महाविद्यालय के उद्देश्यः-

1.कृषि से सम्बन्धित विभिन्न विषयों का संपूर्ण ज्ञान प्रदान करना

2.शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थियों के संपूर्ण विकास के लिए कार्यक्रमों का आयोजन

3.महाविद्यालय का प्रमुख कार्य कृषि से सम्बन्धित सैधांतिक एवं प्रायोगिक शिक्षा प्रदान करना, जो कि सफलतापूर्वक चल रहा हैं ।

महाविद्यालय द्वारा छात्रों को शिक्षा सुचारू रूप से प्रदान की जा रही हैं तथा छात्रों का प्रदर्शन उत्तम हैं। विद्यार्थियों द्वारा प्राप्तांकों की तालिका नीचे दी जा रही हैं, जिससे अवगत होता हैं कि छात्र शिक्षा ग्रहण करने में अग्रणी हैं।

कक्षा बी.एससी. (कृषि आनर्स)	विद्यार्थियों की संख्या				कुल विद्यार्थी	टिप्पणी
	प्राप्तांक प्रतिशत					
	50 से कम	51 से 60	61 से 75	75 प्रतिशत से अधिक		
प्रथम वर्ष	–	–	–	–		परिणाम अघोषित
द्वितीय वर्ष	2	16	24	2	44	प्रथम वर्ष का परिणाम
तृतीय वर्ष	0	9	26	2	37	द्वितीय वर्ष का परिणाम
चतुर्थ वर्ष	0	5	32	3	40	तृतीय वर्ष का परिणाम

स्वीकृत कार्य एवं रिक्त पदों का विवरणः- इस महाविद्यालय में स्वीकृत शैक्षणिक तथा गैर शैक्षणिक पदों का विवरण इस प्रकार हैः-

(I) शैक्षणिक पदों का विवरणः-

क्र.सं.	पद का नाम	स्वीकृत पदों की संख्या	भरे हुए पदों की संख्या	रिक्त पदों की संख्या
1.	सहायक आचार्य	10	05	05
2.	सह–आचार्य	02	–	02
3.	आचार्य	01	–	01

(II) गैर-शैक्षणिक पदों का विवरणः-

क्र.सं.	पद का नाम	स्वीकृत पदों की संख्या	भरे हुए पदों की संख्या	रिक्त पदों की संख्या
1.	प्रयोगशाला सहायक	04	00	04
2.	निजी सहायक	01	00	01
3.	कनिष्ठ लिपिक	01	01	–
4.	फार्म मैनेजर	01	–	01
5.	पम्प ऑपेरटर	01	0	01
6.	पुस्तकालय सहायक	01	–	01
7.	कृषि पर्यवेक्षक	01	01	–
8.	वाहन चालक*	02	02	–

*संविदा पर

3.विभाग के प्रमुख कार्य तथा प्रत्येक कार्य के विरूद्ध वर्ष 2015–16 की प्रगतिः-

महाविद्यालय का प्रमुख कार्य कृषि में शिक्षा प्रदान करने के साथ साथ विद्यार्थियों का सम्पूर्ण विकास करना हैं। विद्यार्थियों की नियमित कक्षाऐं हो रही हैं। समय पर सम्बन्धित विषय के सैधांतिक एवं प्रायोगिक कालांश संबंधित शिक्षक द्वारा लिए जा रहे हैं। प्रथम छः माह की सैधांतिक एवं प्रायोगिक परिक्षाऐं समय पर सफलता पूर्वक सम्पन्न हो चुकी हैं । जनवरी, 2016 से द्वितीय छः माह की कक्षाऐं नियमित रूप से चल रही हैं । कक्षा प्रतिनिधि चयन का चुनाव अगस्त माह में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

- **महाविद्यालय द्वारा 05 दिसम्बर 2015 को अंर्तराष्ट्रीय मृदा दिवस का आयोजन किया गया।**
- **विश्वविद्यालय का स्थापना दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया। जिसमें विद्यार्थियों ने विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये।**
- **अन्तर महाविद्यालय स्तरीय खेल-कूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें कृषि महाविद्यालय मण्डोर के छात्रों ने क्रिकेट में जीत हासिल की ।**
- **अंतर कक्षा खेल कूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में क्रिकेट, वालीबॉल, बैडमिंटन, टेबल टेनिस,शतरंज इत्यादि को शामिल किया गया।**
- **राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.) के माध्यम से विद्यार्थियों को रक्त दान के लिये प्रेरित किया गया। जिस पर गणतंत्र दिवस (26 जनवरी 2016) के अवसर पर 30 विद्यार्थियों ने रक्त दान किया।**

- विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम के अनुरूप पुस्तकें सुगमता से उपलब्ध करवाने हेतु इस वर्ष विभिन्न विषयों की 260 पुस्तकें खरीदी गई। महाविद्यालय के पुस्तकालय में कुल 1249 पुस्तकें उपलब्ध हैं।
- विद्यार्थियों को समसामयिक घटनाओं एवं तथ्यों इत्यादि की जानकारी से अवगत करवाने हेतु हिन्दी एवं अंग्रेजी समाचार पत्र एवं पत्रिकाऐं उपलब्ध करवाई जा रही हैं।
- अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों को ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव हेतु भेजने से पूर्व महाविद्यालय में 5 दिवस का एक ओरिएन्टेशन प्रोग्राम रखा गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न विषय के शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को कृषि तकनीकी एवं कृषि प्रसार शिक्षा के बारे में जानकारी प्रदान की गई।

- अंर्तराष्ट्रीय मृदा दिवस पर काजरी, जोधपुर द्वारा आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने भाग लिया, जिसमें छात्र श्री अनिल स्वामी (प्रथम वर्ष) एवं श्री संजय कुमार (तृतीय वर्ष) ने प्रथम स्थान, छात्र विष्णु कुमार (प्रथम वर्ष) ने द्वितीय स्थान तथा छात्र श्री पवन सारस्वत (चतुर्थ वर्ष) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया । इसी अवसर पर निबंध प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसमें छात्र श्री बंशीलाल (तृतीय वर्ष) ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।
- महाविद्यालय द्वारा राष्ट्रीय पर्वो के आयोजन में विद्यार्थियों ने सक्रिय भागीदारी निभाई तथा विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियां छात्रों द्वारा की गई।

आलौच्य वर्ष (Current year 2015-2016) की विशेष पहल एवं उपलब्धियां:-

- छात्रा सुश्री रेखा चौधरी, अंतिम वर्ष, बीएस.सी.(कृषि) द्वारा विश्वविद्यालय स्तर पर मैरिट में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।
- महामहिम राज्यपाल एवं कुलाधिपति के निर्देशानुसार शैक्षणिक वातावरण में सुधार के उपायों को लागू करना।
- महाविद्यालय में शिक्षकों एवं कर्मचारियों की उपस्थिति बायोमेट्रिक मशीन द्वारा सुनिश्चिता राष्ट्रीय सेवा योजना के अंतर्गत विद्यार्थियों द्वारा रक्त दान
- शिक्षकों द्वारा अध्यापन कार्य हेतु एलसीडी प्रोजेक्टर का उपयोग कर पावर-पाईन्ट प्रेजेन्टेशन द्वारा शिक्षण कार्य
- कंम्प्यूटर प्रयोगशाला की स्थापना कर विद्यार्थियों को कंम्प्यूटर शिक्षा का ज्ञान प्रदान करवाना
- 75 प्रतिशत से कम उपस्थिति रहने पर उनके अभिभावकों को जरिये पत्र एवं दूरभाष द्वारा सूचना

कृषि महाविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा प्रकाशित पुस्तक,पत्र,लोकप्रिय लेख इत्यादि का वर्णन इस प्रकार हैं:-

प्रकाशन इत्यादि	राष्ट्रीय जर्नल	अर्न्तराष्ट्रीय जर्नल
पुस्तक अध्याय	1	-
शोध पत्र	2	-
लोकप्रिय लेख	1	-
रेडियो वार्ता	5	-
प्रशिक्षण व्याख्यान	10	-

सार संक्षेप

कृषि महाविद्यालय, मण्डोर जोधपुर द्वारा विद्यार्थियों को उच्च स्तरीय शिक्षा प्रदान करने एवं उनके सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास के लिये आवश्यक शैक्षणिक वातावरण जैसे नियमित कक्षाओं का संचालन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेल-कूद प्रतियोगिता, व्याख्यान इत्यादि का आयोजन समय-समय पर किया जा रहा हैं। शिक्षण कार्य के अतिरिक्त प्रशासनिक कार्यो व अनुसंधान में भी शिक्षकों द्वारा सहयोग किया जा रहा हैं।

कृषि महाविद्यालय, सुमेरपुर (पाली)

कृषि महाविद्यालय, सुमेरपुर लूणी नदी के संग्रहण क्षेत्र के परिवर्तनशील मैदान खण्ड-2-1 (जालोर, पाली एवं सिरोही जिले) में स्थित हैं। इस महाविद्यालय में कुल 158 विद्यार्थी अध्यनरत् हैं। जिनमें प्रथम वर्ष के 43, द्वितीय वर्ष के 43, तृतीय वर्ष के 34 तथा अंतिम वर्ष के 38 विद्यार्थी हैं। इन विद्यार्थियों में से 14 छात्र तथा 42 छात्राऐं विभिन्न एजेन्सियों द्वारा प्रदत्त छात्रवृत्तियां प्राप्त कर रहे हैं। कृषि महाविद्यालय को 20 हेक्टेयर भूमि आंवटन हेतु प्रस्ताव राजस्थान सरकार को भेजा गया, जो विचाराधीन हैं । महाविद्यालय द्वारा छात्रों की शिक्षा सुचारू रूप से निष्पादित की जा रही हैं तथा छात्रों का प्रदर्शन उत्तम हैं। विद्यार्थियों द्वारा प्राप्तांकों की तालिका नीचे दी जा रही हैं, जिससे अवगत होता हैं कि विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने में अग्रणी हैं।

कक्षा बी.एससी. (कृषि आनर्स)	विद्यार्थियों की संख्या				कुल विद्यार्थी	टिप्पणी
	प्राप्तांक प्रतिशत					
	50 से कम	51 से 60	61 से 75	75 प्रतिशत से अधिक		
प्रथम वर्ष	–	–	–	–		परिणाम अघोषित
द्वितीय वर्ष	03	20	18	02	43	प्रथम वर्ष का परिणाम
तृतीय वर्ष	–	08	24	02	34	द्वितीय वर्ष का परिणाम
चतुर्थ वर्ष	–	06	31	01	38	तृतीय वर्ष का परिणाम

स्वीकृत कार्य एवं रिक्त पदों का विवरण:

कृषि महाविद्यालय, सुमेरपुर-पाली के पदों का विवरण इस प्रकार हैं:

(शैक्षणिक एवं अशैक्षणिक पदों का विवरण)

	पद का नाम	पदो की संख्या		
		स्वीकृत पदों की संख्या	भरे हुए पदों की संख्या	रिक्त पदों की संख्या
1.	आचार्य	1	1	0
2.	सह– आचार्य	2	0	2
3.	सहायक आचार्य	10	3	7
4.	निजी सचिव	1	1	0
5.	कनिठ लिपिक	1	0	1
6.	फार्म मैनेजर	1	1	0
7.	पम्प ऑपरेटर*	1	1*	0
8.	प्रयोगशाला सहायक**	4	4**	0
9.	कृषि पर्यवक्षेक	1	1	0
10.	पुस्तकालय सहायक	1	0	1
	कुल	23	12	11

***पद के विरूद्ध चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी कार्यरत**

****पदों के विरूद्ध एक वरिष्ठ लिपिक एवं दो चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी कार्यरत**

विभागीय प्रमुख कार्य तथा प्रत्येक प्रमुख कार्य के विरूद्ध आलौच्य वर्ष (Current Year) में प्रगतिः

कृषि महाविद्यालय, सुमेरपुर की आलौच्य वर्ष में प्रगति एवं महत्वपूर्ण उपलब्धियां निम्न प्रकार से हैं:-

- कक्षा प्रतिनिधी चयन तथा महाविद्यालय छात्र संघ का चुनाव दिनांक 26.08.2015 को सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस चुनाव में श्री गोपाल धाकड़ (चतुर्थ वर्ष) अध्यक्ष, श्री जितेन्द्र कुमार (तृतीय वर्ष) जनरल सेक्रेटरी तथा श्री सुकन राज (द्वितीय वर्ष) संयुक्त सचिव चुने गये।
- महाविद्यालय द्वारा 05 दिसम्बर 2015 को अंर्तराष्ट्रीय मृदा दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उप निदेशक, कृषि विस्तार, पाली समारोह के मुख्य अतिथि थे। जिसमें डॉ. एच.पी. परेवा, सहायक प्राध्यापक (मृदा विज्ञान) द्वारा मृदा जांच कैसे और क्यों ?पर एक व्याख्यान दिया गया।
- स्वच्छता अभियान के अंतर्गत महाविद्यालय तथा कृषि अनुसंधान उप-केन्द्र परिसर में स्वच्छता का पूरे वर्ष विशेष ध्यान रखा गया।
- विद्यार्थीयों को समसामयिक घटनाओं एवं तथ्यों इत्यादि की जानकारी से अवगत करवाने हेतु हिन्दी एवं अंग्रेजी समाचार पत्र एवं पत्रिकाऐं उपलब्ध करवाई जा रही हैं।
- अंर्तराष्ट्रीय मृदा दिवस पर केन्द्रीय शुष्क अनुसंधान संस्थान(काजरी) जोधपुर द्वारा दिनांक 05.12.2015 को आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने भाग लिया, जिसमें छात्र श्री गोपाल लाल धाकड़ (चतुर्थ वर्ष) ने प्रथम स्थान, श्री गुरजीत कुमार (चतुर्थ वर्ष) ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इसी अवसर पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें छात्रा सुश्री ममता बंसल (चतुर्थ वर्ष) ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।
- महाविद्यालय में यूनाइटेड नेशन सेंटर फॉर इंडिया एण्ड भूटान (यूनिक) एवं श्री रामचंद्र मिशन, चैन्नई के सौजन्य से मानवीय मूल्यों पर आधारित अंर्तराष्ट्रीय निंबध प्रतियोगिता में छात्रा सुश्री भावना सिंह राठौड़ (द्वितीय वर्ष) ने क्षेत्रीय स्तर पर तृतीय स्थान प्राप्त किया।
- महाविद्यालय द्वारा राष्ट्रीय पर्वो, शिक्षक दिवस, हिन्दी दिवस, विश्व समता दिवस पर समारोह आयोजित किये गये। इन आयोजनों में विद्यार्थीयों ने सक्रिय भागीदारी निभाई तथा विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियां छात्रों द्वारा की गई।

- गणतंत्र दिवस के अवसर पर सुमेरपुर क्षेत्र के केन्द्रीय समारोह में महाविद्यालय के विद्यार्थीयों ने हिस्सा लिया तथा उनके प्रदर्शन को उप खण्ड अधिकारी, सुमेरपुर द्वारा सराहा गया।
- महाविद्यालय की क्रिकेट टीम का चयन किया गया। इस टीम ने अंतर महाविद्यालय क्रिकेट प्रतियोगिता में भाग लेकर दूसरा स्थान प्राप्त किया।
- राष्ट्रीय सेवा योजना के अंतर्गत महाविद्यालय के छात्रों द्वारा वृक्षारोपण किया गया।

- महाविद्यालय की छात्राओं को छात्रावास की सुविधा प्रदान की जा रही हैं। इस छात्रावास में वर्तमान में 30 छात्राऐं हैं। यह छात्रावास कृषि अनुसंधान उप केन्द्र के पुराने भवन में संचालित किया जा रहा हैं।

आलौच्य वर्ष (Current year 2015-2016) की विशेष पहल एवं उपलब्धियां :

- महामहिम राज्यपाल एवं कुलाधिपति के निर्देशानुसार शैक्षणिक वातावरण में सुधार के उपायों को लागू करना
- महाविद्यालय में शिक्षकों एवं कर्मचारियों उपस्थिति बायोमेट्रिक मशीन द्वारा सुनिश्चिता
- राष्ट्रीय सेवा योजना के अंतर्गत विद्यार्थीयों द्वारा वृक्षारोपण
- शिक्षकों द्वारा अध्यापन कार्य हेतु एलसीडी प्रोजेक्टर का उपयोग कर पावर-पाईन्ट प्रेजेन्टेशन द्वारा शिक्षण कार्य
- 75 प्रतिशत से कम उपस्थिति रहने पर उनके अभिभावकों को जरिये पत्र एवं दूरभाष द्वारा सूचना
- विद्यार्थीयों को सूचना तकनीकी की सुविधा हेतु महाविद्यालय में संचालित कक्षाओं के समय इंटरनेट की सुविधा प्रदान करना

कृषि महाविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा प्रकाशित पुस्तक,पत्र,लोकप्रिय लेख इत्यादि का वर्णन इस प्रकार हैं:-

प्रकाशन इत्यादि	राष्ट्रीय जर्नल	अर्न्तराष्ट्रीय जर्नल
पुस्तक अध्याय	7	-
शोध पत्र	4	-
लोकप्रिय लेख	16	-

परिसंवाद,सम्मेलन एवं प्रशिक्षण विवरण :

सेमीनार	1

अवार्ड

श्री एम.के. वैष्णव, वरिष्ठ लिपिक, को श्रीमान् उप खण्ड अधिकारी, सुमेरपुर द्वारा गणतंत्र दिवस के अवसर पर महाविद्यालय में उल्लेखनीय योगदान के लिये प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

श्री गुलाब सिंह, निजी सहायक, को श्रीमान् उप खण्ड अधिकारी, सुमेरपुर द्वारा गणतंत्र दिवस के अवसर पर महाविद्यालय में उल्लेखनीय योगदान के लिये प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

सार संक्षेप

महाविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों को उच्च स्तरीय शिक्षा सफलतापूर्वक प्रदत्त की जा रही हैं तथा इनके व्यक्तित्त्व एवं प्रतिभा निखारने हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा हैं।

कृषि महाविद्यालय, नागौर

माननीया मुख्यमंत्री महोदया की बजट घोषणा वर्ष 2015-16 के बिन्दु संख्याः 77 की पालना में कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर के अधीन कृषि महाविद्यालय, नागौर की स्थापना की गई। इस महाविद्यालय में शिक्षण सत्र 2015-16 में प्रथम वर्ष में 39 विधार्थियों को प्रवेश दिया गया हैं। वर्तमान में महाविद्यालय राजकीय पॉलिटेकनिक कॉलेज, नागौर के भवन में संचालित किया जा रहा हैं। महाविद्यालय के भवन निर्माण हेतु राज्य सरकार द्वारा स्वीकृति प्रदान की जाकर बजट आवंटित किया गया हैं। नवीन कृषि महाविद्यालय के भवन का शिलान्यास माननीया मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे जी, राजस्थान सरकार, जयपुर द्वारा दिनांक 28.10.2015 को किया गया।

शैक्षणिक व गैर शैक्षणिक पदों की स्वीकृति राज्य सरकार द्वारा प्राप्त हो चुकी हैं। विश्वविद्यालय स्तर पर पद भरने हेतु आवश्यक कार्यवाही प्रक्रियाधीन हैं। वर्तमान में शिक्षण कार्य हेतु विश्वविद्यालय के अन्य विभागों के शिक्षकों द्वारा अध्यापन कार्य सुचारू रूप से संचालित किया जा रहा हैं।

स्वीकृत कार्य एवं रिक्त पदो का विवरण :

राज्य सरकार के पत्र क्रमांकः प. 4(25)कृषि-3/2015 दिनांक 29.07.2015 द्वारा नव सृजित कृषि महाविद्यालय नागौर हेतु कुल 26 पदों की स्वीकृति जारी की गई हैं।

कृषि महाविद्यालय, नागौर के स्वीकृत शैक्षणिक एवं अशैक्षणिक पदों का विवरण

	पद का नाम	पदों का संख्या		
		स्वीकृत पदों की संख्या	भरे हुए पदों की संख्या	रिक्त पदों की संख्या
1.	अधिष्ठाता/आचार्य	01	01	–
2.	सह– आचार्य	02	00	02
3.	सहायक आचार्य	10	00	10
4.	पुस्तकालय सहायक	01	00	01
5.	निजी सहायक	01	00	01
6.	वरिष्ठ लिपिक (ग्रेड–1)	01	00	01
7.	कनिष्ठ लिपिक (ग्रेड–2)	01	00	01
8.	प्रयोगशाला सहायक	04	00	04
9.	कृषि पर्यवेक्षक	01	00	01
10.	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी/चौकीदार	04	00	04
	कुल	26	01	25

विभाग के प्रमुख कार्य तथा प्रत्येक कार्य के विरूद्ध वर्ष 2015-16 की प्रगतिः-

- प्रथम वर्ष बीएस.सी. (कृषि) के प्रथम छः माही (सेमेस्टर) की परीक्षाऐं पूर्ण हो चुकी हैं।
- कक्षा प्रतिनिधि चयन का चुनाव अगस्त माह में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।
- विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम के अनुरूप पुस्तकें सुगमता से उपलब्ध करवाने हेतु इस वर्ष विभिन्न विषयों की पुस्तकें खरीदी गई।
- विद्यार्थियों को समसामयिक घटनाओं एवं तथ्यों इत्यादि की जानकारी से अवगत करवाने हेतु हिन्दी एवं अंग्रेजी समाचार पत्र एवं पत्रिकाऐं उपलब्ध करवाई जा रही हैं।
- महाविद्यालय द्वारा राष्ट्रीय पर्वो के आयोजन में विद्यार्थीयों ने सक्रिय भागीदारी निभाई तथा विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियां छात्रों द्वारा की गई।
- आलौच्य वर्ष (Current year 2015-2016) की विशेष पहल एवं उपलब्धियां:-
- महाविद्यालय के भवन का शिलान्यास माननीया मुख्यमंत्री महोदया श्रीमती वसुन्धरा राजे जी, राजस्थान सरकार, जयपुर द्वारा किया गया।
- 75 प्रतिशत से कम उपस्थिति रहने पर उनके अभिभावकों को जरिये पत्र एवं दूरभाष द्वारा सूचना

सार संक्षेपः

•महाविद्यालय में शैक्षणिक व गैरशैक्षणिक पदों के रिक्त होने के उपरांत भी अन्य महाविद्यालय एवं विभागों से शिक्षकों की सेवाऐं लेकर शिक्षण कार्य सफलता पूर्वक संपन्न किया गया।

कृषि डिप्लोमा संस्थान

कृषि डिप्लोमा संस्थान, नागौर में कुल 19 विद्यार्थी अध्ययनरत् हैं। डिप्लोमा कोर्स का चतुर्थ सेमेस्टर माह फरवरी 2016 में पूर्ण होगा। इस वर्ष संस्थान में नये विद्यार्थीयों को प्रवेश नहीं दिया गया हैं तथा शैक्षणिक सत्र 2015-16 को राज्य सरकार एवं विद्या परिषद् की बैठक में लिये गये निर्णय अनुसार शून्य माना गया। इस संस्थान हेतु भूमि का आवंटन राज्य सरकार द्वारा किया जाना हैं।

वर्तमान में यह संस्थान कृषि महाविद्यालय,नागौर के साथ संचालित किया जा रहा हैं। पूर्व में संस्थान लाडनुं-नागौर में संचालित किया जा रहा था।

विद्यार्थी अध्ययन में अग्रणी हैं तथा उनके द्वारा प्राप्तांकों की तालिका नीचे दी जा रही हैं:-

कक्षा (कृषि डिप्लोमा)	विद्यार्थियों की संख्या				कुल विद्यार्थी	टिप्पणी
	प्राप्तांक प्रतिशत					
	50 से कम	51 से 60	61 से 75	75 प्रतिशत से अधिक		
प्रथम वर्ष	1	4	7	9	21	—

स्वीकृत कार्य एवं रिक्त पदों का विवरणः-

क्र. सं.	पद	पदों की संख्या	भरे हुए पद	रिक्त पद
1.	प्रिंसीपल	1	1*	1
2.	व्याख्याता	4	0	4
3.	प्रयोगशाला सहायक	1	0	1
4.	कृषि पर्यवेक्षक	1	0	1
5.	वरिष्ठ/कनिष्ठ लिपिक	2	0	2
6.	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	2	1	1
	कुल योग	11	1	10

*अतिरिक्त कार्यभार :

आलौच्य वर्ष (Current year) की विशेष पहल एवं उपलब्धियां:-

- माननीय कुलपति डॉ. बी.आर. छींपा द्वारा विद्यार्थीयों को डिप्लोमा कार्स के भविष्य की संभावनाओं पर एक व्याख्यान् दिया गया।
- शिक्षण कार्य को सुचारू रूप से चलाने हेतु संस्थान को अस्थाई तौर पर कृषि महाविद्यालय नागौर में स्थानांतरित किया गया हैं।

सार संक्षेप

कृषि डिप्लोमा संस्थान में शिक्षण कार्य विश्वविद्यालय के अन्य केन्द्रों/महाविद्यालयों के शिक्षकों को अतिरिक्त कार्यभार सौंप कर पूर्ण करवाया जा रहा हैं।

सार संक्षेप (कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर)

कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के अंर्तगत राज्य के पश्चिमी क्षेत्र के 6 जिलों (जोधपुर, बाड़मेर, पाली, जालोर, सिरोही एवं नागौर) का भू-भाग आता हैं। कृषि जलवायु खण्ड के आधार पर यह क्षेत्र तीन भागों में विभक्त हैं। इन क्षेत्रों में कृषि अनुसंधान, प्रसार शिक्षा तथा कृषि शिक्षा से सम्बन्धित कार्यो के निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त कर क्षेत्र के विकास हेतु कार्यरत हैं। इस विश्वविद्यालय द्वारा वर्ष 2015-16 में निर्धारित लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को प्राप्त किया।

विश्वविद्यालय की सर्वोच्च प्राधिकारी संस्था, प्रबंध बोर्ड में माननीय अध्यक्ष राजस्थान विधानसभा द्वारा श्री जोगाराम पटेल, विधायक लूणी-जोधपुर को सदस्य के रूप में नामित्त किया गया। प्रबंध बोर्ड की प्रथम बैठक दिनांक 05.10.2015 को आयोजित की गई। इस बैठक में बोर्ड द्वारा विश्वविद्यालय हेतु कुलपति चयन समिति में सदस्य को नामित्त करना, शिक्षण कार्यो के सुचारू संचालन हेतु सेवानिवृत्त प्राध्यापकों को राज्य सरकार के आदेशानुसार शिक्षण कार्यो में सहबद्ध करने हेतु निर्णय लिया गया।

विद्या परिषद की द्वितीय बैठक दिनांक 28.09.2015 में सेवानिवृत्त प्राध्यापकों की सेवाऐं संविदा आधार पर लेना, पाठ्यक्रम विवरिणका में संशोधन व मुद्रण, कृषि डिप्लोमा कोर्स के शिक्षण सत्र 2015-16 को शून्य घोषित करना तथा पाठ्यक्रम के निर्बाध रूप से संचालन हेतु लाडनुं-नागौर परिसर को अस्थाई तौर पर कृषि महाविद्यालय,नागौर में स्थानांतरित करने, विश्वविद्यालय अधिनियम के तहत् 4 वरिष्ठ विषय विशेषज्ञों का सहयोजन तथा सहायक प्राध्यापकों एवं अन्य शिक्षकों के कैरियर एडवांसमेन्ट स्कीम इत्यादि पर निर्णय लिये गये

विश्वविद्यालय की वित्त समिति का गठन कर दिनांक 15.01.2016 को समिति की प्रथम बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में बजट अनुमान वित्त वर्ष 2015-16 एवं बजट अनुमान वित्त वर्ष 2016-17 पर विचार विमर्श पश्चात् अनुमोदित किया गया। वर्ष 2015-16 के बजट प्रावधान रूपये 1901.00 लाख में से माह दिसम्बर 2015 तक कुल व्यय रूपये 976.51 लाख दर्ज किया गया।

वर्तमान में विश्वविद्यालय में अधिकारी/शिक्षक/कर्मचारियों की अत्यंत कमी हैं। कुल 399 स्वीकृत पदों में से मात्र 134 पद भरे हुए हैं। राज्य सरकार द्वारा विश्वविद्यालय के 62 पद तथा कृषि विज्ञान केन्द्रों हेतु 32 शैक्षणिक व 33 अशैक्षणिक रिक्त पदों को भरने हेतु स्वीकृति जारी कर दी गई हैं। विश्वविद्यालय के रिक्त पदों को भरने हेतु अग्रिम कार्यवाही प्रक्रियाधीन हैं। कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर, कृषि महाविद्यालय सुमेरपुर-पाली तथा कृषि डिप्लोमा संस्थान लाडनुं-नागौर के लिये भूमि आवंटन सम्बन्धी प्रस्ताव राज्य सरकार के समक्ष विचाराधीन हैं।

महामहिम राज्यपाल एवं कुलाधिपति महोदय द्वारा गांव गोद लेने हेतु दिये गये निर्देशानुसार गांव नेवरा तहसील औसियां-जोधपुर को इस विश्वविद्यालय द्वारा स्मार्ट गांव में परिवर्तित करने हेतु गोद लिया गया।

उक्त सम्बन्ध में किये गये विभिन्न कार्यक्रमों के तहत् किसान-वैज्ञानिक संवाद, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, स्वच्छता अभियान, सब्जियों में कीटनाशी रसायनों के अधिक उपयोग से उत्पन्न दुष्प्रभाव, पशुपालन इत्यादि पर जानकारी

उपलब्ध करवाई जा रही हैं।

उच्च शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने हेतु महामहिम राज्यपाल एवं कुलाधिपति महोदय द्वारा प्रदत्त निर्देशों यथा प-8 कार्यक्रम लागू करना, शैक्षणिक वातावरण में सुधार करना, मार्किंग सिस्टम लागू करना, विद्यार्थीयों की 75 प्रतिशत उपस्थिति सुनिश्चित करना, बायोमैट्रिक मशीन द्वारा अधिकारी/शिक्षक/कर्मचारियों की उपस्थिति दर्ज करना इत्यादि हेतु निर्देश जारी कर पालना सुनिश्चित की जा रही हैं।

कृषि अनुसंधान निदेशालय द्वारा अपने अधीनस्थ 2 कृषि अनुसंधान केन्द्र (मण्डोर-जोधपुर एवं केशवाना-जालोर) तथा 3 कृषि अनुसंधान उप केन्द्रों पर क्षेत्र की प्रमुख फसलों, बाजरा, मोठ, ग्वार, तिल, मूंग, अरण्ड, सरसों, जीरा, इसबगोल, मिर्च इत्यादि पर शोध कार्य जारी हैं। इसी क्रम में क्षेत्रीय अनुसंधान एवं विस्तार सलाहकार समिति द्वारा (जोन I ए, II ब तथा II अ) खरीफ फसलें जैसे कि बाजरा (जी.एच.बी. -732, जी.एच.बी. -905), मूंग (आई.पी.एम. -02-03),ग्वार(एच.जी.-2-20, आर.जी.सी.-1031 तथा आर.जी.सी.-1033) तथा रबी फसलों के अंतर्गत राया(पूसा सरसों -25), चना(आर.एस.जी. -945,जी.एन.जी. -1581), जौ(आर.डी. -2794), गेंहूँ(पी.बी.डब्लू. -590), गाजर(पूसा रूधिरा) तथा प्याज की उन्नत किस्में (आर.ओ.1 तथा आर.ओ. 59) को प्रावेधिक कृषि तकनीक सिफारिशें में सम्मिलित करने का अनुमोदन किया गया।

नवीन कृषि उत्पादन तकनीकों जिसमें ग्वार में खरपतवार नियंत्रण, अंगमारी रोगों की रोकथाम तथा जैविक प्रबंधन द्वारा विभिन्न रोगों से बचाव, तिल में अकार्बोनिक स्त्रोत द्वारा नत्रजन प्रबंधन तथा चूसक कीटों से बचाव, मूंग में खरपतवार नियंत्रण, मूंगफली में मुख्यतः होने वाले रोग जैसे जड़गलन एवं कालर गलन रोगों से बचाव तकनीक को विकसित कर प्रावेधिक कृषि तकनीक सिफारिशें में सम्मिलित करने का अनुमोदन किया गया।

रबी फसलों में उत्पादकता बढ़ाने हेतु 5 नयी उत्पादन तकनीकें जिसमें सरसों में समन्वित पोषक तत्त्व प्रबंधन, सौंफ में जैविक पौषण प्रबंधन तथा मोयला की रोकथाम, चना में फलीछेदक कीट का नियंत्रण तथा मैथी में मोयला (एफिड) नियंत्रण की सिफारिश की गई।

बीज निदेशालय द्वारा विभिन्न केन्द्रों पर फसलों की अलग-अलग किस्मों का रबी 2014-15 में कुल बीज 360.27 क्विंटल तथा खरीफ में कुल 666.16 क्विंटल बीज उत्पादित किया गया। निदेशालय द्वारा कुल 1.77 क्विंटल तिल (आर. टी. 346 तथा आर.टी. - 351) प्रजनक बीज उत्पादित किया गया।

प्रसार शिक्षा निदेशालय के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा किसानों के खेत पर उन्नत प्रौद्योगिकी के प्रसार हेतु कुल 1252 अंग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (खरीफ एवं रबी) आयोजित किये गये। खरीफ फसलों के उन्नत प्रौद्योगिकी प्रर्दशनों द्वारा 25-30 प्रतिशत अधिक उपज दर्ज की गई। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा 56 संस्थागत प्रशिक्षण तथा 95 असंस्थागत प्रशिक्षण गांवों में आयोजित किये गये। किसानों को खरीफ व रबी ऋतु में उगाई जाने वाली फसलों के बारे में उन्नत कृषि तकनीकी ज्ञान की जानकारी उपलब्ध करवाने हेतु ऋतु पूर्व किसान सम्मेलनों का आयोजन किया गया। इन आयोजनों में सम्बन्धित क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों को भी आमंत्रित किया गया। अर्न्तराष्ट्रीय मृदा दिवस के अवसर पर समारोह आयोजित कर किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड का वितरण किया गया। इन समारोहों में संबंधित क्षेत्र के माननीय सांसदों द्वारा अध्यक्षता की गई। तैलीय पेड़-पौधों पर 2 प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन कर किसानों को महुआ, रतनजोत, करंज इत्यादि पर जानकारी उपलब्ध करवाई गई। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा निरंतर किसानों से सम्पर्क कर कृषि सम्बन्धी समस्याओं का निराकरण करना, प्रदर्शनों को आयोजित करना तथा कृषि साहित्य का वितरण किया जा रहा हैं।

विश्वविद्यालय के अधीनस्थ शिक्षण संस्थानों में कुल 389 विद्यार्थी अध्यनरत् हैं। कृषि महाविद्यालयों में कृषि स्नात्तक स्तर तक का पाठ्यक्रम संचालित किया जा रहा हैं। दो कृषि महाविद्यालय पूर्व से संचालित हो रहे है तथा वर्ष 2015 में राज्य सरकार द्वारा एक नवीन कृषि महाविद्यालय नागौर में प्रारंभ करने की स्वीकृति प्रदान की हैं। इस नवीन महाविद्यालय के भवन का शिलान्यास माननीया मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे जी द्वारा किया गया। कृषि महाविद्यालय मण्डोर-जोधपुर एवं सुमेरपुर-पाली के नवीन भवन निमार्ण का कार्य लगभग संपूर्ण होने जा रहा हैं। विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्रदान कर उनके सर्वागीण विकास हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कर प्रतिबद्धतापूर्वक शिक्षा के क्षेत्र में उच्च आयाम स्थापित करने के प्रयास किये जा रहे हैं।

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर

E-mail : vcunivag@gmail.com